शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

विभिन्न विषयों पर आधारित

रुचिपूर्ण बाल कविताओं का संग्रह

बाल साहित्य सृजन

(01 जून 2021 से 31 अगस्त 2021 तक)

आओ हाथ से हाथ मिलाएँ, बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएँ।

9458278429

01-06-2021

बाल साहित्य सृजन

मंगलवार

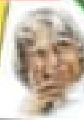

1 मेरी माँ

मेरी माँ बड़ी ही अच्छी,
देती सीख हमेशा सच्ची।
सत्य बोलना हमें सिखाती,
झूठ न बोलो वह समझाती।।

सीखो बड़ों का आदर करना,
कभी किसीसे नहीं झगड़ना।
खाने की चीज बाँटकर खाओ,
छोटे को पहले दो बड़े बन जाओ।।

रचना-
नैमिष शर्मा (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० (1-8)- तेहरा
विकास खण्ड व जिला- मथुरा

2 मेरे पापा

मेरे प्यारे-प्यारे पापा,
सारे जग से न्यारे पापा।
अपनी गोदी में बैठाकर,
मुझको बहुत दुलारें पापा।।

घर के हैं उजियारे पापा,
हम बच्चों के सहारे पापा।
खेल-खिलौने हमें दिलाते,
खुशियों के फव्वारे पापा।।

रचना-
जितेन्द्र कुमार (स०अ०)
प्रा० वि० धनौरा सिल्वर नगर-1
बागपत, बागपत

3 मेरी बहना

मेरी प्यारी-प्यारी बहना,
हम सब मानें उसका कहना।
हम बच्चों में सबसे बड़ी हैं,
उनके बिना हमें ना रहना।।

चाहे छोटी, चाहे बड़ी हो,
घर-घर की तो शान है बहना।
भाई को तो हमेशा चाहे,
माता-पिता का मान है बहना।।

रचना-
हेमलता गुप्ता (स०अ०)
प्रा० वि० मुकन्दपुर, लोधा, अलीगढ़

4 दो भाई

चिंटू-मिंटू दोनों भाई,
हमेशा करते थे लड़ाई।
झगड़ा सुनते मम्मी आयी,
दोनों की हुई खूब पिटाई।।

दोनों जोर-जोर से रोये,
रोना सुनकर दादी आयी।
दोनों को प्यार से समझाया,
फिर दोनों को गले लगाया।।

रचना-
शहनाज़ बानो (स०अ०)
उ० प्रा० वि० भौंरी, मानिकपुर- चित्रकूट

02 जून 2021

बाल साहित्य सृजन

बुधवार

1

मेरा प्यारा घोड़ा

बादल मेरा प्यारा घोड़ा,
हवा की करता है वो सैर।
सुबह शाम वो चौकड़ी भरता,
रखता नहीं जमीं पर पैर।।

सरपट सरपट तेज दौड़ता,
करता दिनभर के वह काम।
गुड़ व चने का भोजन करता,
अस्तबल में करता विश्राम।।

रचना-
इला सिंह (स०अ०)
उच्च प्राथमिक विद्यालय पनेरूवा
अमौली ,फतेहपुर ।

2

बिल्ली मौसी

बिल्ली मौसी बड़ी सयानी,
दिन भर करती खूब शैतानी।
सारा दूध वह चट कर जाती,
चूहों को भी वह नाच नचाती।
सारे घर में राज वह करती ,
चूहों को डरा- डरा कर रखती।
मेरे सामानों की भी रक्षा करती,
इसलिए सदा मेरे साथ रहती।

रचना -
नीलम भास्कर (स०अ०)
उ० प्रा० वि० सिसाना
बागपत,बागपत

3

गाय माता

गाय हमारी प्यारी प्यारी,
होती सफेद,काली ,भूरी।
झटपट खा जाती ये घास,
बच्चों के मन की है खास।।

गाय से मिलता पौष्टिक दूध हमें,
जो रखता बीमारी से दूर हमें।
गाय हमारी माता है,
हम सबका उससे नाता है।।

रचना-
आरती यादव (स०अ०)
प्रा०वि० रनियां प्रथम
सरवनखेड़ा, कानपुर देहात

4

बन्दर मामा

देखो बन्दर मामा आया,
फलों के ठेले पर जा कूदा।
फल भी वहाँ से उठा ले गया,
दूर बैठकर उसने खाया।।

बन्दर जब एक झुंड में होते,
किसी मोहल्ले में घुस जाते।
खूब अपना उत्पात मचाते,
उन्हें देख सब घर में घुसते।।

रचना-
माला सिंह (स०अ०)
क० वि० भरौटा
सरधना,जनपद मेरठ

गुरुवार 03/06/2021

बाल साहित्य सृजन

1

पतंग की मस्ती

पतंग की अपनी मस्ती है,
आसमान में उड़ती है।
हवा के संग बहती है,
रंग-बिरंगी होती है॥

हवा में ये करती है मस्ती,
उड़े पतंगे बस्ती-बस्ती।
जब आपस में ये लड़ती,
तब सबको हैं खूब लुभाती॥

रचना :- शिप्रा सिंह (स०अ०)
उ० प्रा० वि० रूसिया
अमौली, फतेहपुर

2

स्कूल की मस्ती

मस्ती में स्कूल चले हम,
दीदी संग स्कूल चले हम।
खेल-खेल में पढ़ना सीखें,
'अ-आ' को लिखना सीखें॥

मैडम संग गीत गाए हम,
गिनती भी सीख जाएँ हम।
मीना मंच सजाएँ हम,
जन्मदिन भी मनाएँ हम॥

रचना:- ऊषा रानी (स०अ०)
कम्पोजिट विद्यालय खाता
वि०क्षे०मवाना, मेरठ

3

रंगों की मस्ती

रंगों की मस्ती मेरे
मन को खूब हर्षाती।
लॉकडाउन की बोरियत
ड्राइंग से मिट जाती॥

रंग मुझे बहुत हैं भाते,
हर जगह ही दिख जाते।
नीला आकाश,पीली सरसों,
रंग बिरंगे फूल हैं भाते॥

रचना:- ज्योति सागर (स०अ०)
उ० प्रा० वि० सिसाना
बागपत, बागपत

4

बारिश की मस्ती

बादल मामा आओ ना,
बारिश संग में लाओ ना।
बूदों की बौछारों से तुम,
मस्ती हमें कराओ ना॥

चुन्नी-मुन्नी छतरी लेकर आओ,
आओ तुम भी भीगने आओ ना।
सोंधी सुगंध देखो मिट्टी से आये,
पानी में छप-छपाक लगाओ ना॥

रचना:- वन्दना यादव 'ग़ज़ल' (स०अ०)
अभि० प्रा० वि० चन्दवक,
डोभी, जौनपुर

04.06.2021 शुक्रवार

बाल साहित्य सृजन

1 नन्हा बीज

एक छोटे से बीज को मैंने,
मिट्टी में जब दबाया था।
बड़ी आस से मैंने उसको,
पानी थोड़ा पिलाया था।।

एक नन्हा सा पौधा निकला,
आज मिट्टी के अन्दर से।
मैं भी खुशी से उछल पड़ा था,
देख के पल वो सुन्दर से।।

रचना-
डॉ० नीतू शुक्ला (प्र०अ०)
मॉडल प्राइमरी स्कूल बेथर 1
सिकंदरपुर कर्ण, उन्नाव

2 पत्तियाँ

पेड़-पौधों का विशेष भाग है,
हरी-हरी प्यारी सी पत्तियाँ।
अनेक आकार- प्रकार की होती हैं,
पेड़ों की जान हैं ये पत्तियाँ।।

क्लोरोफिल पाया जाता इनमें,
औषधियों के भी काम है आती।
सूर्य के प्रकाश की उपस्थिति में,
भोजन का भी निर्माण है करती।।

रचना-
अनुप्रिया यादव (स०अ०)
क० वि० काजीखेड़ा
खजुहा, फतेहपुर

3 फूल हैं प्यारे

फूल हैं हम, तुम हमें ना तोड़ो,
डाल पर लगते प्यारे-प्यारे।
नीले, पीले, लाल, गुलाबी,
महक रहे हैं बाग में सारे।।

खुशबू से भर जाए उपवन,
खिलखिला जब हँसते सारे।
सुन्दरता ऐसी है जैसे,
माँ के आँचल में सितारे।।

रचना-
श्रीमती पूनम गुप्ता"कलिका"
(स० अ०), प्रा०वि० धनीपुर,
धनीपुर, अलीगढ़

4 हरे-भरे पेड़

पेड़ होते बड़े महान,
देते हमको जीवनदान।
पेड़ों से हरियाली होती,
जीवन में खुशहाली होती।।

पेड़ होते ईश्वर का वरदान,
पेड़ से ही धरती की शान।
आओ हम सब पेड़ लगाएं,
धरती को फिर हरा बनाएं।।

मृदुला वर्मा (स० अ०)
प्रा०वि०अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

मिशन शिक्षण संवाद

· आओ हाथ से हाथ मिलाएँ · **मिशन शिक्षण संवाद** · बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएँ ·

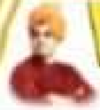

05.06.2021 शनिवार

बाल साहित्य सृजन

1

बाल गीत

खिलौने

पापा नये खिलौने लाते,
हम सब उनमें ही खो जाते।
एक नाचता बन्दर लाये,
भालू सरपट दौड़ लगाए।।
रेल हमारी चलती छुक-छुक,
जम्प मारता मेंढक रुक-रुक।
मन उठता मस्ती से झूम,
सारी दुनिया लेता घूम।।

रचना-
रूपी त्रिपाठी (स० अ०)
उ० प्रा० वि० लोहारी
सरवनखेड़ा, कानपुर देहात

2

रेलगाड़ी

छुक-छुक, छुक-छुक करती गाड़ी,
धुआँ उड़ाती चलती गाड़ी।
पटरी पर चलती है गाड़ी,
देखो मेरी रेलगाड़ी।।
सरपट-सरपट दौड़े गाड़ी,
लकड़ी की यह रेलगाड़ी।
जल्दी से दिल्ली पहुँचाए,
सैर-सपाटा हमें कराए।।

रचना-
सुमन पाण्डेय (प्र०अ०)
प्रा० वि० टिकरी-मनौटी
खजुहा, फतेहपुर

3

मेरी गुड़िया

मन को भाए मेरी प्यारी गुड़िया,
मेरा साथ निभाए मेरी गुड़िया।
चमकीली आँखें दिखाए मेरी गुड़िया,
काले लम्बे केश दिखाए मेरी गुड़िया।।

लाल, गुलाबी, हरे, नीले-पीले,
पहने कपड़े चमकीले रंग-बिरंगे।
सज सँवर कर मटक-मटक के चलती,
मगन हो मैं भी उसके संग चलती।।

रचना-
प्रतिमा उमराव (स०अ०)
उच्च प्रा०वि०अमौली (1-8)
अमौली, फतेहपुर

4

मनभावन खिलौने

खेल खिलौना बड़ा रंगीला,
रंग-बिरंगा पीला-पीला।
चुन्नू- मुन्नू तुम्हे दिखाऊँ,
आओ तुमको खेल खिलाऊँ।।

यह लो बन्दर चाबी वाला,
घोड़ा गाड़ी लकड़ी वाला।
आओ तुम्हें जहाज दिखाऊँ,
आसमान की सैर कराऊँ।।

रचना-
सुषमा त्रिपाठी (स०अ०)
उ०प्रा० वि० रुद्रपुर
खजनी, गोरखपुर

आपका दिन शुभ हो..

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण.

शिकायत या सुझाव के लिए व्हाट्सएप करें. 94582 78429

संकलन
काव्यांजलि टीम
मिशन शिक्षण संवाद

बाल साहित्य सृजन

1

बाल गीत

रंग-बिरंगे गुब्बारे

रंग-बिरंगे, बहुत ही प्यारे,
बच्चों तुम ले लो गुब्बारे।
एक रुपए में एक मिलेगा,
बेईमानी ना कोई करेगा।।

आईं चिंकी-पिंकी दौड़ी,
छोड़ के गरमा-गरम कचौड़ी।
अरे-अरे रुक जाओ भैया!
लेकर आए हैं दो रुपैया।।

रचना-
मन्जू शर्मा (स०अ०)
प्रा०वि० नगला जगराम, सादाबाद, हाथरस

2

पापा मेरे

पापा मेरे सबसे प्यारे,
सबसे सुन्दर जग से न्यारे।।
जब भी घर को आते हैं।
खूब खिलौने लाते हैं।।

पार्क और मेले में घुमाते,
खूब हमें टहलाते हैं।
अपनी गोदी में ले हमको।
जग पूरा दिखलाते हैं।।

रचना
शिखा वर्मा (इं०प्र०अ०)
उ० प्रा० वि० स्योढ़ा, बिसवाँ, सीतापुर

3

कद्दू जी

प्यारे-प्यारे कद्दू जी,
मुँह फुलाकर कहाँ चले?
बैंगन राजा तुम्हें पुकारे,
आकर उनसे मिलो गले।।

जल्दी से पास आओ,
सारी बातें भूल जाओ।
आपस में कट्टी तोड़कर,
दोस्ती को आगे बढ़ाओ।।

रचना-
रीना (स०अ०)
प्रा० वि० सालेहनगर, वि० क्षेत्र०-जानी, मेरठ

4

चुहिया रानी

चुहिया रानी, चुहिया रानी,
घर में घुसकर धूम मचाती।
सामानों के थैले परखे,
रोटी कुतर-कुतर खा जाती।।

इस कोने से उस कोने तक,
सरपट है वह दौड़ लगाती।
कभी पकड़ने की जब सोचो,
झटपट अपने बिल में जाती।।

रचना-
अरविन्द कुमार सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० धवकलगंज, बड़ागाँव, वाराणसी

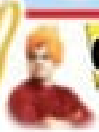

08-06-2021 मंगलवार

बाल साहित्य सृजन

1 सूरज दादा

सूरज दादा बात बताओ,
ऐसा क्यों तुम करते हो?
सोती हूँ मैं गहरी नींद में,
जल्दी मुझे जगाते हो।।

चन्दा मामा भी बेचारे,
तुमसे बहुत ही डरते है।
जब आते हो आप गगन में,
जल्दी से छिप जाते हैं।।

रचना-
हेमलता गुप्ता (स०अ०)
प्रा०वि० मुकन्दपुर, लोधा, अलीगढ़

2 चन्दा मामा

चन्दा-मामा, चन्दा-मामा,
मेरे घर में आना।
अपने संग तुम कुछ,
प्यारी परियाँ लाना।।

संग में खेलेंगे मिलकर,
तुम्हे गले लगाएँगे।
परियों के संग नाचेंगे,
मिलकर धूम मचाएँगे।।

रचना-
शहनाज़ बानो (स०अ०)
उ० प्रा० वि० भौंरी, मानिकपुर- चित्रकूट

3 तारे

तारे टिम-टिम रात को करते,
सूर्य के प्रकाश में न दिखते।
उनका अपना प्रकाश होता,
कोई छोटा, कोई बड़ा दिखता।।

उत्तर दिशा में होता 'ध्रुवतारा',
बड़ा चमकीला सबसे न्यारा।
सात तारे 'सप्त-ऋषि' कहलाते,
चार कौनों पर तीन सीध में रहते।।

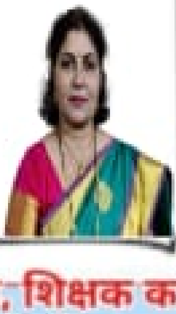

रचना-
नैमिष शर्मा (स०अ०)
उच्च प्रा० विद्यालय (1-8)- तेहरा
विकास खण्ड व जनपद- मथुरा

4 आकाश

सर पर हमारे खुला आकाश,
देता है बढ़ने का उल्लास।
नील गगन ये प्यारा-प्यारा,
ढक लेता है जग ये सारा।।

दिन में इस पर सूर्य चमकता,
रात को चाँद-तारों से दमकता।
पंछियों की परवाज़ बढ़ाता,
मानव का विश्वास जगाता।।

रचना-
जितेन्द्र कुमार (स०अ०)
प्रा० वि० धनौरा सिल्वर नगर-1
बागपत, बागपत

मिशन शिक्षण संवाद
• आओ हाथ से हाथ मिलाएँ • • बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएँ •
09 जून 2021 बुधवार

बाल साहित्य सृजन

1 रसगुल्ला

देखो देखो पापा आये,
साथ में अपने रसगुल्ला लाये।
सोनू मोनू दौड़े आये,
रसगुल्ला देख दोनों मुस्काये।।

गोल-गोल,मीठा-मीठा,
चाशनी में डूबा रसगुल्ला।
खाने को लेकर उसको,
मच रहा है हल्ला गुल्ला।।

रचना-
इला सिंह (स०अ०)
उच्च प्राथमिक विद्यालय पनेरूवा
अमौली ,फतेहपुर ।

2 गुझिया

मिठाईयों में होती गिनती इसकी,
गुझिया खाती चिकीं-पिकीं।
आता जब होली का त्यौहार,
मम्मी बनाती है गुझिया मज़ेदार।।

मेवा,खोए का होता पौष्टिक स्वाद ,
मिलकर खाने से मिटता है विवाद।
रमन,अमन,रज़िया और गुड़िया,
आओ मज़े के साथ खाएं गुझिया।।

रचना -
नीलम भास्कर (स०अ०)
उ० प्रा० वि० सिसाना
बागपत,बागपत

3 जलेबी

टेढ़ी-मेढ़ी ये जलेबी,
थोड़ी पतली थोड़ी गोल।
लाल पीली रसीली जलेबी,
खाकर सब बोले मीठे बोल।।

लाते जब गरमा गरम जलेबी,
टप-टप रस ये टपकाती।
खाते जब दही संग जलेबी,
सबके मन को ये भाती।।

रचना-
आरती यादव (स०अ०)
प्रा०वि० रनियां प्रथम
सरवनखेड़ा, कानपुर देहात

4 पकौड़ियाँ

गरमा गर्म पकौड़ियाँ बनाई,
गरमा गर्म चाय से खाईं।
सब मिलकर जब साथ बैठे,
खुशियाँ भी खूब मनाई।।

जो मेहमान आए घर पर,
उन सबको भी खिलाई।
हरी मिर्च,धनिया,पुदीना,
पीसकर चटनी भी बनाई।।

रचना-
माला सिंह (स०अ०)
क० वि० भरौटा
सरधना,जनपद मेरठ

10/06/2021

गुरूवार

बाल साहित्य सृजन

1 अनार

पापा मेरे गये बाजार,
लाल-लाल लाये अनार।
कितने मीठे होते हैं ये,
मुझको खूब भाये अनार।।

छोटे छोटे दाने इसके,
गोल गोल होता अनार।
पापा बोले कितने हैं ये,
हम भी बोले पूरे चार।।

रचना-
ज्योति सागर (स०अ०)
उ० प्रा० वि० सिसाना
बागपत, बागपत

2 आम

स्वाद में ये रसीला है,
रंग इसका पीला है।
फलों का राजा कहतें,
नाम 'आम' सजीला है।।

बच्चें बड़ो को भाता है,
गर्मी को दूर भगाता है।
औषधि गुणों से भरपूर,
आम-पना कहलाता है।।

रचना-
वन्दना यादव "ग़ज़ल"
अभि० प्रा० वि० चन्दवक,
डोभी, जौनपुर

3 केला

देखो-देखो आया ठेला,
पीले-पीले लाया केला।
खूब मजे से हमने खाया,
सबको खूब लुभाता केला।।

खूब विटामिन इससे पाओ,
दूध के संग मजे से खाओ।
देख-देख ना तुम ललचाओ,
आओ भइया संग में खाओ।।

रचना-
शिप्रा सिंह (स०अ०)
उ० प्रा० वि० रूसिया
अमौली, फतेहपुर

4 तरबूज

मोटा पेट तरबूज आया,
पतला तना खूब इतराया।
गर्मी भी अब खूब पड़ी है,
लू भी अब चलने लगी है।।

मीठा रस खूब भरा है,
फाइबर भी खूब भरा है।
हरा-हरा रंग है इसका,
लाल-लाल गुद्दा इसका।।

रचना-
ऊषा रानी (स०अ०)
उ०प्रा०वि० खाता
मवाना , मेरठ

11.06.2021

बाल साहित्य सृजन

शुक्रवार

1

होली

होली का त्योहार है आया,
सबके घर में खुशियाँ लाया।
पापा, मम्मी, दीदी, भैया,
सबके लिए उपहार है लाया।।

गुझिया, पापड़, मट्ठी, खीर,
पूरे घर को है महकाया।
भिगो-भिगो कर पानी से,
मैंने अबीर-गुलाल लगाया।।

रचना -
डॉ० नीतू शुक्ला (प्र०अ०)
मॉडल प्राइमरी स्कूल बेथर 1
सिकंदरपुर कर्ण,उन्नाव

2

रक्षाबन्धन

आया-आया, त्योहार आया,
रक्षाबन्धन का त्योहार आया।
भाई-बहन का दुलार लाया,
मीठी नोंक-झोंक साथ लाया।।

बहन निभाती फर्ज प्यार का,
माथे पर तिलक लगाकर।
भाई लेता वचन रक्षा का,
हाथों में राखी बँधवाकर।।

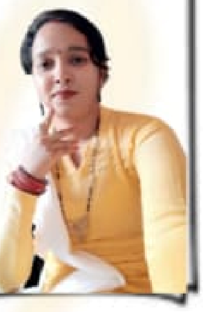

रचना -
अनुप्रिया यादव (स०अ)
क० वि० काजीखेड़ा
खजुहा , फतेहपुर

3

दिवाली

आई दिवाली, आई रे!
घर में हुई सफाई रे!
सबके घर-दीवारों की,
फिर से हुई पुताई रे!

रोशनी की लगेंगी लड़ियाँ,
खुशियों की होंगी घड़ियाँ।
खील-बताशे और मिठाई,
खूब चलेंगी फुलझड़ियाँ।

रचना-
पूनम गुप्ता "कलिका"(स०अ०)
प्रा० वि० धनीपुर
धनीपुर, अलीगढ़

4

ईद

ईद का त्योहार है आया,
साथ में अपने खुशियाँ लाया।
सब मिलकर जश्न मनाएँगे,
दुश्मन को भी गले लगाएँगे।।

घर-घर में बनेगी मीठी सेंवई,
सब एक दूजे के घर जाएँगे।
घर में होगी खुदा की इबादत,
सब सलामती की दुआ मनाएँगे।।

रचना -
मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा०वि० अमरौधा प्रथम
अमरौढा, कानपुर देहात

12/06/2021

बाल साहित्य सृजन

शनिवार

1 वर्ग

होती भुजाएं जिसमें चार,
आपस में करती वह बात।
बराबर होती चारों भुजाएं,
90 अंश के समकोण बनाएँ।।

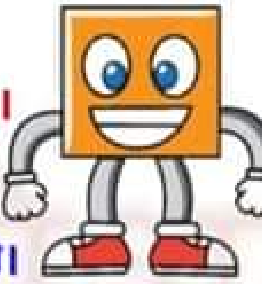

बन्द आकृति होती जिसकी,
360 अंश के होते कोण सभी।
विकर्ण बराबर एक दूसरे के,
बच्चों, इसे ही वर्ग है कहते।।

रचना- प्रतिमा उमराव (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० अमौली (1-8)
अमौली, फतेहपुर

2 वृत्त

मैं गोल- गोल लड्डू सा हूँ,
मैं साइकिल के पहिये सा हूँ।
मम्मी की माथे की बिंदी सा,
मैं चंदा मामा की आकृति सा हूँ।।

माँ के हाथों की चूड़ी जैसा,
मेरी आकृति है रोटी जैसा।
मैं गोल-गोल फिर गेंद सा हूँ,
हाँ जी मैं तो गोली रूपी वृत्त हूँ।।

सुषमा त्रिपाठी (स0अ0)
उ0 प्रा0 वि0 रुद्रपुर खजनी
गोरखपुर

3 त्रिभुज

तीन भुजाएं होती इसमें,
तीन कोण ही होते है।
तीन शीर्ष होते है इसमें,
इसको त्रिभुज कहते है।।

त्रिभुज का परिमाप होता,
योग तीन भुजाओं का।
180 अंश होता है योग,
तीनो आन्तरिक कोणों का।।

रचना- रूपी त्रिपाठी (स०अ०)
उ०प्रा०वि०लोहारी
सरवनखेड़ा, कानपुर देहात

4 आयत

आमने-सामने की भुजाएँ बराबर,
चार जुड़ी भुजाएँ 90 डिग्री पर।
चारों कोणों का योग 360 डिग्री,
परिमाप चारों भुजाओं का योग पर।।

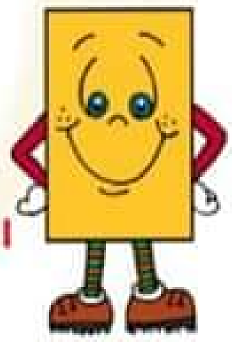

आयत वर्ग से मिलता-जुलता,
क्षेत्रफल लम्बाई-चौड़ाई का गुणनफल होता।
आयत के विकर्ण आपस में बराबर,
पेंसिल बॉक्स आयताकार है होता।।

रचना- सुमन पाण्डेय (प्र० अ०)
प्रा० वि० टिकरी-मनौटी
खजुहा, फतेहपुर

बाल साहित्य सृजन

1

उर्दू भाषा

हिन्द आर्य भाषा है उर्दू,
पाकिस्तान की राष्ट्र भाषा।
दाएँ से बाएँ लिखी जाती,
यू०पी० की शासकीय भाषा।।

"नस्तालीक" लिपि है इसकी,
दक्षिण एशिया में बोली जाती।
जम्मू और कश्मीर राज्य की,
प्रशासनिक भाषा उर्दू कहलाती।।

रचना-
मन्जू शर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० नगला जगराम,
सादाबाद, हाथरस

2

संस्कृत भाषा

संस्कृत है भाषा बहुत पुरानी,
गीता, पुराण, वेद की बानी।
अनुपम मधुरिम है यह भाषा,
यह भारत भू की है भाषा।।

ज्ञान और विज्ञान छिपाये,
हर भाषा की माँ कहलाये।
देवनागरी लिपि में लिखते,
श्लोक रोज हम सब हैं पढ़ते।।

रचना-
सतीश चन्द्र (प्र०अ०)
प्रा० वि० अकबापुर,
पहला, सीतापुर

3

अंग्रेजी भाषा

अंग्रेजी है बड़े काम की,
एक विदेशी भाषा।
बोली जाती विश्व में पूरे,
रोमन लिपि की भाषा।।

छब्बीस अक्षर इस भाषा में,
होते बड़े सयाने।
Vowel-consonant कहाते,
ग्रामर को जो जाने।।

रचना-
रीना काकरान (स०अ०)
प्रा० वि० सालेहनगर,
जानी, मेरठ

4

हिन्दी भाषा

देवनागरी लिपि है जिसकी,
हिन्दी ऐसी मधुरिम भाषा।
भारत में बोली जाती है,
राजकीय भारत की भाषा।।

संस्कृत से उपजी जो मधुर है,
हर भारतवासी की प्यारी।
है साहित्य का अनुपम संग्रह,
कविता, गीत, कहानी न्यारी।।

रचना-
शिखा वर्मा (इं०प्र०अ०)
उ० प्रा० वि० स्योढ़ा
बिसवाँ, सीतापुर

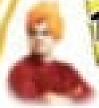

15-06-2021

बाल साहित्य सृजन

मंगलवार

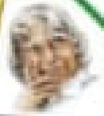

1

बाग़

देखो कितना सुन्दर लगता,
फलों से लदे पेड़ों का बाग।
आम, आड़ू, अनार लगे हैं,
बच्चों को ललचाता बाग।।

मीठे फल इसके हम खाते,
ठण्डी छाया देता है बाग।
आओ इसकी रक्षा करें हम,
हमको जीवन देता बाग।।

रचना-
हेमलता गुप्ता (स०अ०)
प्रा०वि० मुकन्दपुर, लोधा, अ

2

चन्दा मामा

चन्दा-मामा, चन्दा-मामा,
मेरे घर में आना।
अपने संग तुम कुछ,
प्यारी परियाँ लाना।।

संग में खेलेंगे मिलकर,
तुम्हे गले लगाएँगे।
परियों के संग नाचेंगे,
मिलकर धूम मचाएँगे।।

रचना-
शहनाज़ बानो (स०अ०)
उ० प्रा० वि० भौंरी, मानिकपुर- चित्रकूट

3

तारे

तारे टिम-टिम रात को करते,
सूर्य के प्रकाश में न दिखते।
उनका अपना प्रकाश होता,
कोई छोटा, कोई बड़ा दिखता।।

उत्तर दिशा में होता 'ध्रुवतारा',
बड़ा चमकीला सबसे न्यारा।
सात तारे 'सप्त-ऋषि' कहलाते,
चार कौनों पर तीन सीध में रहते।।

रचना-
नैमिष शर्मा (स०अ०)
उच्च प्रा० विद्यालय (1-8)- तेहरा
विकास खण्ड व जनपद- मथुरा

4

फूल

फूल खिले कितने सारे,
लगते मेरे मन को प्यारे।
मेरा बाग बनाएं सुन्दर,
जैसे आसमान के तारे।।

कोई नीला, कोई पीला,
कोई लाल, कोई चमकीला।
कोई सफेद तो कोई गुलाबी,
भगवन की ये अद्भुत लीला।।

रचना-
जितेन्द्र कुमार (स०अ०)
प्रा० वि० धनौरा सिल्वर नगर-1
बागपत, बागपत

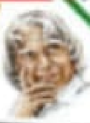

बाल साहित्य सृजन

1

टॉम एंड जेरी

टॉम एंड जेरी की कहानी,
है सबसे अलग व न्यारी।
इनकी जोड़ी लगती प्यारी,
लड़ाई इनकी अजब निराली।।

जेरी की चालाकी भाती,
टॉम की शरारते लुभाती।
लड़ाई में प्यार ही दिखता,
अंत हमेशा सुखद ही होता।।

रचना-
इला सिंह (स०अ०)
उच्च प्राथमिक विद्यालय पनेरूवा
अमौली, फतेहपुर ।

2

डोरेमोन

मेरा प्यारा रोबोट डोरेमोन,
जो सदी की सैर कराता है।
पल में बारिश, पल में धूप,
सब गैजेट से कर जाता है।।

बच्चों का मनोरंजन करता,
शिक्षा भी खूब दे जाता है।
नित समय पर पढ़ना-लिखना,
डोरेमोन खेल में सिखा जाता है।।

रचना -
नीलम भास्कर (स०अ०)
उ० प्रा० वि० सिसाना
बागपत, बागपत

3

छोटा भीम

छोटा भीम, छोटा भीम,
है प्यारा सब बच्चों का।
गोल-गोल लड्डू खाता भीम,
करता वो अंत दुश्मनों का।।

भीम निवासी ढोलकपुर का,
दोस्त वो राजू, छुटकी का।
करके विनाश बुराई का,
सबक सिखाता अच्छाई का।।

रचना-
आरती यादव (स०अ०)
प्रा०वि० रनियां प्रथम
सरवनखेड़ा, कानपुर देहात

4

मोगली

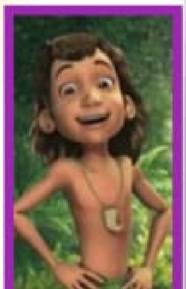

द जंगल बुक कहानी,
जिसका हीरो है मोगली।
मोगली है इंसान का बच्चा,
भटक कर जो जंगल पहुँचा।।

जहाँ भेड़िया माता-पिता बने,
उनके दो बच्चे भाई भी बने।
शेरखान मोगली का दुश्मन,
मारना चाहता था उसे हरदम।।

रचना-
माला सिंह (स०अ०)
क० वि० भरौटा
सरधना, मेरठ

· आओ हाथ से हाथ मिलाएँ · **मिशन शिक्षण संवाद** · बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएँ ·

17/06/2021 गुरुवार

बाल साहित्य सृजन

1 खरगोश

एक छोटा सा जानवर,
भागा फिरता इधर उधर।
हरी-हरी पत्तियाँ खाता,
ज्यादा पसन्द इसे गाजर।।

कान हैं इसके बडे-बडे,
खरगोश बहुत है प्यारा।
इसके साथ खेल खेलकर,
मन खुश होता हमारा।।

रचना-
ज्योति सागर (स०अ०)
उ० प्रा० वि० सिसाना
बागपत, बागपत

2 बिल्ली

बिल्ली रानी, बिल्ली रानी,
घर में घुस करें मनमानी।
दूध मलाई खा जाती है,
भाता नहीं उसे है पानी।।

चूहे को आता देख कर,
छुप गई बनकर सयानी।
चकमा देकर भागा चूहा,
हाथ मले उसे हुई हैरानी।।

रचना-
वन्दना यादव 'ग़ज़ल'
अभि० प्रा० वि० चन्दवक,
डोभी, जौनपुर

3 बंदर

देखो एक मदारी आया,
साथ में दो बन्दर लाया।
ठुमक-ठुमक कर खेल दिखाते,
बच्चों के मन को खूब बहलाते।

नाच-नाच के हमें दिखाते,
केला देख झट खुश हो जाते।
सर पर पगड़ी पहन कर देखो,
बन्दर मामा कैसे इतराते जाते।

रचना-
शिप्रा सिंह (स०अ०)
उ० प्रा० वि० रुसिया
अमौली, फतेहपुर

4 चूहा

काले-काले रंग के चूहे,
मेरे घर में दौड़ लगाये।
बिल्ली मौसी के डर से
टंकी के पीछे छुप जाये।।

मोनू को नींद आ गयी,
चूँ-चूँ करके उसे जगाये।
बिस्कुट, रोटी रखी थाली में,
तेज दांत से चट कर जाये।।

रचना-
ऊषा रानी (स०अ०)
उ०प्रा०वि० खाता
मवाना , मेरठ

आपका दिन शुभ हो..

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण.

शिकायत या सुझाव के लिए व्हाट्सएप करें.. 94582 78429

संकलन
काव्यांजलि टीम
मिशन शिक्षण संवाद

बाल साहित्य सृजन

1 आलू

हर सब्जी में आलू पड़ता,
मुझे बहुत ही अच्छा लगता।
गोभी, मेंथी या हो गाजर,
पालक, बैंगन और टमाटर।।

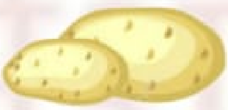

सब्जी का राजा है आलू,
आलू की ही बने कचौड़ी।
इससे हलवा बनता और,
गरम-गरम स्वादिष्ट पकौड़ी।।

रचना-
पूनम गुप्ता "कलिका"
(स० अ०), प्रा०वि० धनीपुर,
धनीपुर, अलीगढ़

2 टमाटर

लाल-लाल, गोल-गोल होते टमाटर,
बच्चों के मन को भाते टमाटर।
सब्जी, सूप और सलाद में खाते,
शरीर में ताकत और खून बढ़ाते।।

खट्टी-मीठी चटनी और सॉस बनती,
बढ़ जाता है पकौड़ी का स्वाद।
सब्जियों में टमाटर होता खास,
रहे इसका स्वाद हमेशा ही याद।।

रचना-
डॉ० नीतू शुक्ला (प्र०अ०)
मॉ० प्रा० स्कूल बेथर 1
सिकंदरपुर कर्ण, उन्नाव

3 पालक

सब्जियों में खास है,
पालक हरी पत्तेदार।
पोषक तत्वों से भरपूर है,
खाने में भी जायकेदार।।

विटामिन-A पाया जाता,
जो आँखों का ध्यान रखता।
आयरन भी इससे मिलता,
खून की कमी को दूर करता।।

रचना-
अनुप्रिया यादव (स०अ०)
क० वि० काजीखेड़ा
खजुहा, फतेहपुर

4 मिर्च

हरी मिर्च मैं कहलाती,
खाने का स्वाद बढ़ाती।
सब सब्जियों में मिल जाती,
खाने को चटपटा बनाती।।

मुझमें 'विटामिन सी' पाई जाती,
बड़ों को भी खूब भाती।
पोषक तत्वों से भरपूर,
मैं हरी मिर्च कहलाती।।

रचना-
मृदुला वर्मा (स० अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

· आओ हाथ से हाथ मिलाएं · **मिशन शिक्षण संवाद** · बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं ·

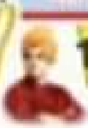

19/06/2021 — शनिवार

बाल साहित्य सृजन

1 शीत ऋतु

सर्दी आयी, सर्दी आयी,
संग-संग ऊनी कपड़े लायी।
स्वेटर, टोपी, मोजे, ग्लब्स,
निकले कम्बल और रजाई।।

थर-थर काँपे नहाने पर,
किट-किट दाँत करें दिनभर।
खाएँ हम पूड़ी पकवान,
सेहत बढ़िया सर्दी भर।।

रचना
सुमन पाण्डेय (प्र०अ०)
प्रा० वि० टिकरी-मनौटी
खजुहा, फतेहपुर

2 बसन्त ऋतु

बसन्त ऋतु सबको भाती,
पेड़ों पर नये पत्ते लाती।
कोयल मीठा गीत सुनाती,
सबके मन को हर्षाती।।

पीले-पीले फूल सरसों के,
इठलातीं फसलें लहरा के।
बौर भरे पेड़ आम के,
मन भाते पेड़ फूलों के।।

रचना
प्रतिमा उमराव (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० अमौली
अमौली, फतेहपुर

3 ग्रीष्म ऋतु

गर्मी आयी, गर्मी आयी,
छुट्टियों की सौगात है लायी।
गर्मी का मौसम है न्यारा,
हम बच्चों को सबसे प्यारा।।

खेल-कूद मस्ती और दुलार,
नानी का वो ढेर सारा प्यार।
जो हम छुट्टियों में हैं पाते,
गर्मी में भी मौज मनाते।।

रचना
रूपी त्रिपाठी (स०अ०)
उ० प्रा० वि० लोहारी
सरवनखेड़ा, कानपुर देहात

4 वर्षा ऋतु

काले-काले बादल देखो,
आसमान पर छाये हैं।
धरती से मिलने को देखो,
सज-धज कर ये आये हैं।।

मेंढक टर-टर करते हैं,
मोर पंख फैलाये हैं।
उमड़-घुमड़ कर बरसे बादल,
बच्चे कागज की नाव बनाये हैं।।

रचना
सुषमा त्रिपाठी (स०अ०)
उ० प्रा० वि० रुद्रपुर खजनी
गोरखपुर

आपका दिन शुभ हो..

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण.
शिकायत या सुझाव के लिए व्हाट्सएप करें. 94582 78429

संकलन
काव्यांजलि टीम
मिशन शिक्षण संवाद

21.06.2021 सोमवार

बाल साहित्य सृजन

1

कलम

कई रंगों में हूँ मैं आती,
बच्चों 'कलम' है मेरा नाम।
दुनिया के सब बच्चे लिखते,
लिखने के आती मैं काम।।

हर बच्चे के बॉक्स में रहती,
कुछ लोगों के जेब में लगती।
हिसाब करना या लिखना हो,
चलाओ जैसे, मैं हूँ चलती।।

रचना-
अरविन्द कुमार सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० धवकलगंज, बड़ागाँव, वाराणसी

2

पुस्तक

सखी हमारी पुस्तक दीदी,
मेरे लिए बुआ ने खरीदी।
लो बिट्टू अपना उपहार,
पढ़कर इसे बनो होशियार।।

सच्ची सहेली है ये हमारी,
आओ कर लें इससे यारी।
अफ़सर बनने का सपना,
पूरा हो एक दिन अपना।।

रचना-
मन्जू शर्मा (स०अ०)
प्रा०वि० नगला जगराम, सादाबाद, हाथरस

3

मेरी पेन्सिल

प्यारी-प्यारी मेरी पेन्सिल,
लिखना मुझे सिखाती है।
जो भी गुरुजन मुझे पढ़ायें,
सब-कुछ ये लिख जाती है।।

ए, बी, सी, श्रुतलेख लिखे,
और वन, टू पेन्सिल प्यारी।
इसके साथ बनाती मैं तो,
सुन्दर सी चित्रकारी।।

रचना
शिखा वर्मा (इं०प्र०अ०)
उ० प्रा० वि० स्योढ़ा, बिसवाँ, सीतापुर

4

बस्ता

मेरा प्यारा-प्यारा बस्ता,
संग में नापे स्कूल का रास्ता।
कन्धों पर मैं इसको टाँगकर,
स्कूल पहुँचता हँसता-हँसता।।

कॉपी, पेन्सिल और किताब,
सब इसके अन्दर हैं जनाब।
टिफिन और पानी की बोतल,
लगती इसमें मुझे लाजवाब।।

रचना-
रीना काकरान (स०अ०)
प्रा० वि० सालेहनगर, वि० क्षेत्र०-जानी, मेरठ

· आओ हाथ से हाथ मिलाएँ · **मिशन शिक्षण संवाद** · बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएँ ·

22-06-2021 मंगलवार

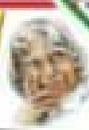

बाल साहित्य सृजन

1 कपाल भाती

आओ बच्चों हम करते हैं,
कपाल-भाती प्राणायाम।
मुख में तेज उत्पन्न करे,
ऊर्जा देता यह व्यायाम।।

रीढ़ की हड्डी सीधा रखते,
कहीं भी बैठ करो व्यायाम।
नाक से साँस लेकर छोड़ो,
करने में यह बड़ा आसान।।

रचना-
शहनाज़ बानो (स०अ०)
उ० प्रा० वि० भौंरी, मानिकपुर- चित्रकूट

2 सूर्य-नमस्कार

सुबह-सुबह करो तुम आसन,
इनके होते कई प्रकार।
सबसे अच्छा, सबसे सुन्दर,
होता है सूर्य-नमस्कार।।

इसमें होते बारह आसन,
मन प्रसन्न हो जाता है।
पाचन-तन्त्र सशक्त होता,
पेट भी कम हो जाता है।।

रचना-
हेमलता गुप्ता (स०अ०)
प्रा०वि० मुकन्दपुर, लोधा, अलीगढ़

3 अनुलोम-विलोम

अनुलोम-विलोम है योग का,
एक उपयोगी प्राणायाम।
बाँयी नासिका से श्वास लेते,
दाहिनी नासिका से छोड़ें तमाम।।

फिर दाहिनी से श्वास लेकर,
बाँयी नासिका से हैं छोड़ते।
सर्दी, जुकाम व दमा की,
शिकायत के चक्र को तोड़ते।।

रचना-
जितेन्द्र कुमार (स०अ०)
प्रा० वि० धनौरा सिल्वर नगर-1
बागपत, बागपत

4 भस्त्रिका

फेफड़े, आँख, नाक, कान,
स्वस्थ रखने में लाभदायक।
पाचन सही, लिवर, किड़नी,
श्वास रोगों में भी सुखदायक।।

मसल रोग में भी लाभदायक,
प्राणवायु अधिक मात्रा में मिलती।
रक्त की भी सफाई हो जाती,
कार्बन-डाइ-ऑक्साइड बाहर निकलती।।

रचना-
नैमिष शर्मा (स०अ०)
उच्च प्रा० विद्यालय (1-8)- तेहरा
विकास खण्ड व जनपद- मथुरा

• आओ हाथ से हाथ मिलाएँ • मिशन शिक्षण संवाद • बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएँ •

23 जून 2021 बुधवार

बाल साहित्य सृजन

1 डाकिया

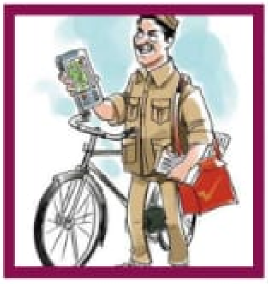

देखो एक डाकिया आया,
साथ हमारे पत्र ले आया।
काँधे पर झोला लटकाये,
खाकी वर्दी पहन मुस्काए।।

घर- घर ये संदेश पहुँचाते,
कठिन रास्तों से ना घबराते।
मेरी चिठ्ठी में संदेश है आया,
नानी ने मुझे गाँव है बुलाया।।

रचना -
नीलम भास्कर (स० अ०)
उ० प्रा० वि० सिसाना
बागपत, बागपत

2 डॉक्टर

करके बीमारी को दूर,
देते हमको जीवनदान।
कहते उन्हें हम डॉक्टर,
सफेद कोट इनकी पहचान।।

सर्दी हो या बुखार,
पल में ये दूर भगाते।
करके हमारा उपचार,
स्वस्थ हमें ये बनाते।।

रचना-
आरती यादव (स० अ०)
प्रा० वि० रनियां प्रथम
सरवनखेड़ा, कानपुर देहात

3 किसान

किसान खेती करता है,
अनाज, फल, सब्जी उगाता है।
बहुत कड़ी मेहनत करता है,
अन्नदाता भी कहलाता है।।

किसान का देश विकास में,
बहुत ही महत्वपूर्ण स्थान है।
इसलिए हम सब गर्व से कहते,
जय जवान, जय किसान है।।

रचना-
माला सिंह (स० अ०)
क० वि० भरौटा
सरधना, मेरठ

4 माली

माली काका बाग में आये,
देख फूल उनको मुस्काये।
पेड़- पौधे गाये, नाचे, झूमे,
हवा भी महकी महकी घूमे।।

क्यारी- क्यारी सँवार रहे,
बाग को चमन बना रहे।
पत्ती- पत्ती सब सँवर रही,
बगिया कैसी महक रही।।

रचना-
इला सिंह (स० अ०)
उ० प्रा० वि० पनेरूवा
अमौली, फतेहपुर

24-06-2021

गुरुवार

बाल साहित्य सृजन

1 चन्दा मामा

चन्दा कितना प्यारा है,
गोल-गोल दिखता है।
सबकी मम्मी का भाई है,
तभी तो मामा लगता है।।

रोज रात को आता है,
आसमान में रहता है।
हम भी मिलने जायेंगे,
हर बच्चा ये कहता है।।

रचना:- ज्योति सागर(स०अ०)
उ० प्रा० वि० सिसाना
बागपत, बागपत

2 पृथ्वी हमारी

पृथ्वी है गोल-गोल,
जैसे घूमती गेंद गोल।
चन्दा, तारे इसके साथी,
इससे दूर रहते काफी।।

हरियाली से श्रृंगार किया,
नदियों का संचार किया।
फूलों-फलों से खूब रची है,
मस्त पवन भी खूब बही है।।

रचना:- ऊषा रानी (स०अ०)
उ० प्रा० वि० खाता
मवाना,मेरठ

3 प्यारे तारे

टिम-टिम करते प्यारे तारे,
बच्चों को खूब भाते तारे।
आसमान में टिम-टिम करते,
अम्बर को खूब सजाते तारे॥

चिंकी, पिंकी, मोना, रिंकी,
आओ मिलकर हम सब खेलें।
आसमान में गिनते हम सब,
देखें आज आये कितने तारे॥

रचना:- शिप्रा सिंह (स०अ०)
उ० प्रा० वि० रूसिया
अमौली, फतेहपुर

4 सूरज

सुबह सवेरे रोज आता सूरज,
उठो, जागो, हमें जगाता सूरज।
आलस, अँधेरा सब दूर भगाकर,
सारा जग रोशन कर जाता सूरज।।

हुआ प्रभात, है लालिमा फैली,
सबको जीवन दे जाता सूरज।
कली-कली है, मुस्कान सजाये,
फूलों को महका जाता सूरज।।

रचना:- वन्दना यादव 'ग़ज़ल'
अभि० प्रा० वि० चन्दवक
डोभी, जौनपुर

25/06/21 शुक्रवार

बाल साहित्य सृजन

1 फूल

फूल हैं हम, तुम हमें ना तोड़ो,
डाल पर लगते प्यारे-प्यारे।
नीले, पीले, लाल, गुलाबी,
महक रहे हैं बाग में सारे।।

खुशबू से भर जाए उपवन,
खिलखिला जब हँसते सारे।
सुन्दरता ऐसी है जैसे,
माँ के आँचल में सितारे।।

रचना-
पूनम गुप्ता "कलिका"(स०अ०)
प्रा०वि० धनीपुर
धनीपुर, अलीगढ़

2 तितली

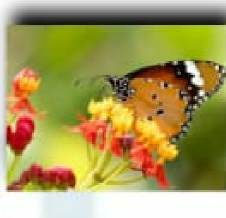

तितली रंग-बिरंगी प्यारी,
उड़ती रहती क्यारी-क्यारी।
छोटे-छोटे पंख फैलाकर,
पिंकी को लगती है न्यारी ।।

फूलों पर दिनभर मंडराती,
एक पल कहीं ठहर न पाती।
हाथ लगा कर उसको छू लूँ,
झट से दूर तितली उड़ जाती।।

रचना-
डॉ० नीतू शुक्ला (प्र०अ०)
मॉ० प्रा० स्कूल बेथर 1
सिकंदरपुर कर्ण, उन्नाव

3 कमल

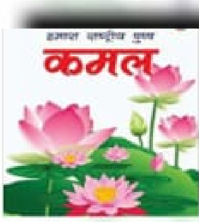

खिलता फूल कमल का,
बहुत ही सुन्दर लगता।
सफेद, गुलाबी रंग इसके,
तालाब के पानी में खिलता।

बड़ी-बड़ी पत्तियाँ इसकी,
'इण्डियन लोटस' कहलाता।।
राष्ट्रीय-फूल भारत का,
बच्चों के मन को भाता।।

रचना-
अनुप्रिया यादव (स०अ०)
क० वि० काजीखेड़ा
खजुहा, फतेहपुर

4 गुलाब

गुलाब का फूल सबसे प्यारा,
सबसे सुन्दर सबसे न्यारा।
खुशबू इसकी बड़ी निराली,
सबके मन को भाने वाली।।

घर आँगन को महकाता,
फूलों का राजा कहलाता।
पूजा में भी काम आए,
सभी के मन को यह भाये।।

रचना-
मृदुला वर्मा (स0अ0)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

मिशन शिक्षण संवाद

- आओ हाथ से हाथ मिलाएं - | - बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं -

26/06/2021 शनिवार

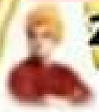

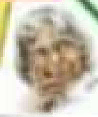

बाल साहित्य सृजन

1 पूर्व दिशा

पूर्व दिशा में छायी लाली,
फूल खिले हैं डाली-डाली।
भँवरों की गुंजन है निराली,
देखो भोर हुई मतवाली।।

पूरब से जब सूरज आता,
अन्धकार को दूर भगाता।
सारी सृष्टि को महकाता,
जीवन की नयी ज्योति जगाता।।

रचना
रूपी त्रिपाठी (स०अ०)
उ० प्रा० वि० लोहारी,
सरवनखेड़ा, कानपुर देहात

2 पश्चिम दिशा

पूर्व दिशा की विपरीत दिशा,
सूर्यास्त की है दिशा।
उत्तर दक्षिण की लम्बवत,
पश्चिम है वह प्रमुख दिशा।।

थार मरुस्थल पश्चिम में भारत के,
राजस्थान राज्य में देश के।
अरब सागर पश्चिमी भारत में,
गुजरात, महाराष्ट्र, गोवा राज्य पश्चिम के।।

रचना
सुमन पाण्डेय (प्र०अ०)
प्रा० वि० टिकरी-मनौटी
खजुहा, फतेहपुर

3 उत्तर दिशा

जिधर निकलता सूरज बच्चों,
उधर खड़े हो जाओ मुँह करके।
बाँए हाथ में होती दिशा उत्तर,
ध्रुव तारा भी इसी दिशा में चमके।।

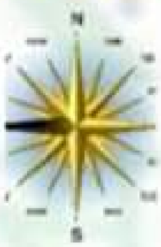

हिमालय पर्वत स्थित है उत्तर में,
जो प्रहरी बन देश की रक्षा करता,
चुम्बकीय तरंगे प्रवेश करती भवन में,
जिससे रक्त संचार ठीक रहता।।

रचना
प्रतिमा उमराव (स०अ०)
उच्च प्रा०वि०अमौली(1-8)
अमौली, फतेहपुर

4 दक्षिण दिशा

ध्रुव तारा चमके जिस दिशा में,
दक्षिण होता विपरीत दिशा में।
अग्नि तत्व से है सम्बन्धित,
आग्नेय कोण दक्षिण-पूर्व दिशा में।।

हिन्द महासागर भारत के दक्षिण में,
समृद्ध संस्कृति व इतिहास में।
कृष्णा, गोदावरी, महानदी नदियाँ,
भारत के दक्षिणी भाग में।।

रचना
सुषमा त्रिपाठी (स०अ०)
उ० प्रा० वि० रुद्रपुर
खजनी, गोरखपुर

आपका दिन शुभ हो..

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण.
शिकायत या सुझाव के लिए व्हाट्सएप करें. 94582 78429

संकलन
काव्यांजलि टीम
मिशन शिक्षण संवाद

· आओ हाथ से हाथ मिलाएँ · मिशन शिक्षण संवाद · बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएँ ·

29-06-2021 मंगलवार

बाल साहित्य सृजन

1 घर

घर अपना प्यारा सा लगता,
अपनापन जहाँ हमको मिलता।
कच्चे-पक्के, बहुमंजिल होते,
दैनिक कार्य कर सुरक्षित हम सोते।।

अपनों के संग घर में रहते,
दु:ख-सुख साथ में मिलकर सहते।
खेलते, कूदते, खाना, खाते।
पढ़-लिखकर फिर बैठ बतलाते।।

रचना-
नैमिष शर्मा (स०अ०)
उच्च प्रा० विद्यालय (1-8)- तेहरा
विकास खण्ड व जनपद- मथुरा

2 स्कूल

कितना सुन्दर, कितना प्यारा,
मेरा स्कूल है सबसे न्यारा।
पेड़-पौधों की हरियाली से,
हमने मिलकर इसे सँवारा।।

नन्हे-मुन्ने, प्यारे-प्यारे बच्चे,
यहाँ पढ़ते हैं रोज आकर।
खूब मेहनत से शिक्षक भी,
पढ़ाते उनको मन लगाकर।।

रचना-
जितेन्द्र कुमार (स०अ०)
प्रा० वि० धनौरा सिल्वर नगर-1
बागपत, बागपत

3 परिवार

छोटा हो या बड़ा हो घर,
खुशियाँ देता हमे अपार।
सब सुख दु:ख के साथी होते,
कहलाता हमारा परिवार।।

एकल या छोटा कहलाता,
जहाँ मात पिता और सन्तान।
मात-पिता, दादी-दादा संग बच्चे,
संयुक्त परिवार में भरते जान।।

रचना-
हेमलता गुप्ता (स०अ०)
प्रा०वि० मुकन्दपुर,
लोधा, अलीगढ़

4 समाज

किसको कहते हम समाज,
बच्चों इन बातों को रखो याद।
सुख-दु:ख में जो साथ निभाते,
एक आवाज में दौड़े आते।।

हम सब एक दूसरे के पूरक,
करेंगें बैर तो रहेगें मूरख।
सदैव करो समाज का सहयोग।
नेक बनो याद रखेंगे लोग।।

रचना-
शहनाज़ बानो (स०अ०)
उ० प्रा० वि० भौंरी,
मानिकपुर, चित्रकूट

30 जून 2021

बुधवार

बाल साहित्य सृजन

1 मोर

हम सबका प्यारा मोर,
है राजा पक्षियों का।
देख बादल मचाता शोर,
राष्ट्रीय पक्षी भारत का।।

रंग बिरंगे पंखों से,
लुभाता सबके मन को।
अपने सुन्दर नृत्य से,
कर देता खुश सबको।।

रचना-
आरती यादव (स०अ०)
प्रा० वि० रनियां प्रथम
सरवनखेड़ा, कानपुर देहात

2 तोता

हरा हरा शरीर होता,
चोंच होती है लाल।
ताजे ताजे फल खाता,
बैठ पेड़ों की डाल।।

घरों में भी पाला जाता,
कहते मिट्ठू लाल।
तोता सुन्दर पक्षी होता,
बोली होती कमाल।।

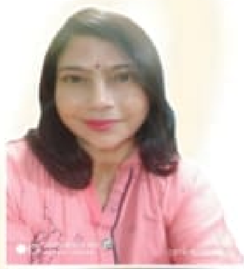

रचना-
माला सिंह (स०अ०)
क० वि० भरौटा
सरधना, मेरठ

3 कबूतर

मेरे अंगना आये कबूतर,
सफेद और बैंगनी कबूतर।
पांवों में पहने पैंजनी कबूतर,
गुंटर गू करते आए कबूतर।।

प्यारे-प्यारे लगते कबूतर,
दाने चुगने बैठे कबूतर।
थोड़ी सी आहट होने पर,
फुर्र से उड़ गये सारे कबूतर।।

रचना-
इला सिंह (स०अ०)
उ० प्रा० वि० पनेरूवा
अमौली, फतेहपुर

4 कोयल

कोयल रानी, कोयल रानी,
कहलाती चिड़ियों की रानी।
डाली-डाली डोल रही हो,
आमों में मिठास घोल रहीं हो।।

कुहू-कुहू कर गीत सुनाती,
हमारे मन को हो लुभाती।
बागों में हमारे रोज़ तुम आती,
मधुर वाणी का पाठ सिखाती।।

रचना-
नीलम भास्कर (स०अ०)
उ० प्रा० वि० सिसाना,
बागपत

बाल साहित्य सृजन

1 टी० वी०

टी० वी० देख के आओ सीखें,
नित प्रतिदिन नये प्रयोग।
विज्ञान सम्बन्धी जानकारी होती,
जिनका होता बहुत उपयोग॥

चिंकी, पिंकी, मोना, रिंकी,
हो जाओ तुम सब तैयार।
आते हैं दूरदर्शन पर,
प्रोग्राम कई विषयवार॥

रचना:-
शिप्रा सिंह (स०अ०)
उ० प्रा० वि० रूसिया
अमौली, फतेहपुर

2 कम्प्यूटर

देखो ये है मेरा कम्प्यूटर,
सारी दुनिया इसके अन्दर।
टी०वी० जैसी इसकी स्क्रीन,
कहते जिसको मॉनिटर॥

बहुत से काम ये करता है,
हर ऑफिस मे दिखता है।
लिखने-पढ़ने के काम,
सारे आसान कर देता है॥

रचना:-
ज्योति सागर (स०अ०)
उ० प्रा० वि० सिसाना
बागपत, बागपत

3 मोबाइल

अपनों से बात कराता मोबाइल,
रिश्ते को मजबूत बनाता मोबाइल।
देश दुनिया की खबरें हैं मुट्ठी में,
नित नये आयाम लाता मोबाइल॥

देखो! राष्ट्र पर विपदा पड़ी है ऐसी,
घर से पाठशाला चलाता मोबाइल।
खान-पान दवा, या हो सुरक्षा हमारी,
जनता को जागरूक बनाता मोबाइल॥

रचना:-
वन्दना यादव 'ग़ज़ल' (स०अ०)
अभि० प्रा० वि० चन्दवक
डोभी, जौनपुर

4 लैपटॉप

मैं हूँ प्यारा सा लैपटॉप,
जानकारी रखता हूँ टॉप।
तुम्हारे साथ में रहता हूँ,
पल-पल अपडेट रहता हूँ॥

मीना, राजू गोद में रख कर,
ज्ञान खोजों इसमें निरंतर।
दिन-रात पढ़ो, खेलों तुम,
मेरे दोस्त बनना तुम॥

रचना:-
ऊषा रानी (स०अ०)
उ० प्रा० वि० खाता
मवाना, मेरठ

बाल साहित्य सृजन

1 राष्ट्र-ध्वज

भारत देश की ध्वजा तिरंगा,
तीन रंग से सजा तिरंगा।।
मध्य अशोक चक्र विराजे,
राष्ट्र पर्व पर फहरा तिरंगा।

भारत की पहचान तिरंगा।
देश की आन और बान तिरंगा।
लहर-लहर लहराए यह तो,
हम सबकी है शान तिरंगा।।

रचना-
पूनम गुप्ता "कलिका"
(स० अ०), प्रा०वि० धनीपुर,
धनीपुर, अलीगढ़

2 राष्ट्र-गान

'जन-गण-मन' जो रोज हम गाते,
सम्मान से अपना सर हैं झुकाते।
राष्ट्रगान भारत का कहलाता,
वीरों की हमको याद दिलाता।।

बावन सेकण्ड का समय है लगता,
देशभक्ति का भाव है भरता।
आओ हम सब मिल कर गाएँ,
जब-जब तिरंगा हम फहराएँ।।

रचना-
डॉ० नीतू शुक्ला
(प्र०अ०)
मॉ० प्रा० स्कूल बेथर 1
सिकंदरपुर कर्ण, उन्नाव

3 राष्ट्रीय-वृक्ष

विशाल बरगद प्यारा,
राष्ट्रीय वृक्ष हमारा।
कहलाये भारत की शान,
मजबूत जड़े हैं पहचान।।

सदाबहार पेड़ ये,
ऑक्सीजन मिले अपार।
वट वृक्ष भी कहलाये,
बरगद पेड़ छायादार।।

रचना-
अनुप्रिया यादव (स०अ०)
क० वि० काजीखेड़ा
खजुहा, फतेहपुर

4 राष्ट्रीय-पक्षी

'मोर' राष्ट्रीय पक्षी कहलाता,
सबके मन को यह है भाता।
सुन्दर-सुन्दर रंगों वाला,
सबसे सुन्दर पक्षी कहलाता।।

बादल जब पानी बरसाता,
मौसम मनभावन हो जाता।
तब यह पंखों को फैलाता,
सबको सुन्दर नाच दिखाता।।

रचना-
मृदुला वर्मा (स० अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

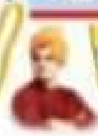

03.07.2021

बाल साहित्य सृजन

शनिवार

1

राष्ट्रीय पुष्प कमल

पंखुड़ियाँ है स्वच्छ-निर्मल,
कोमल सुन्दर पुष्प कमल।
मनमोहक सा रंग गुलाबी,
लाल सफेद है शतदल।।

राष्ट्रीय पुष्प कमल है होता,
सुगन्ध दिशाओं में फैलाता।
कीचड़ में भी यह रहकर,
सबका हृदय धवल करता।।

रचना
सुषमा त्रिपाठी (स०अ०)
उ० प्रा० वि० रुद्रपुर
खजनी, गोरखपुर

2

राष्ट्रीय चिन्ह

सरकार द्वारा आरक्षित प्रतीक,
राष्ट्रीय चिन्ह या मुहर कहलाता है।
प्रयोग जिसका सरकारी कागजों,
अभिलेखों, मुद्रा पर किया जाता है।।

राष्ट्रीय चिन्ह अशोक है भारत का,
आया सारनाथ के राष्ट्रीय स्तम्भ से।
चारों दिशाओं को मुँह करके शेर खड़े,
लागू हुआ जो 26 जनवरी 1950 से।।

रचना
प्रतिमा उमराव (स०अ०)
उ० प्रा० वि० अमौली(1-8)
अमौली, फतेहपुर

3

राष्ट्रीय पशु बाघ

धारीदार, सुन्दर और प्यारा,
बाघ राष्ट्रीय पशु है हमारा।
फुर्ती और शक्ति है इसकी पहचान,
पेन्थेरा टाइग्रिस है वैज्ञानिक नाम।।

ये प्रकृति का है एक वरदान,
इसके संरक्षण में हमारा भी हो योगदान।
1973 में प्रोजेक्ट टाइगर का हुआ एलान,
सुरक्षित रहे देश की आन-बान और शान।।

रचना
रूपी त्रिपाठी (स०अ०)
उ० प्रा० वि० लोहारी
सरवनखेड़ा, कानपुर देहात

4

राष्ट्रीय पञ्चांग

शक संवत आधारित पञ्चांग,
भारत का राष्ट्रीय पञ्चांग।
22 मार्च 1957 से देश में,
सरकार ने मान्य किया भारांग।।

पूरी तरह वैज्ञानिक कैलेण्डर,
सरकारी ये सिविल कैलेण्डर।
चन्द्र कला से हैं दिन निर्धारित,
चैत्र मास से शुरू होता कैलेण्डर।।

रचना
सुमन पाण्डेय (प्र०अ०)
प्रा० वि० टिकरी-मनौटी
खजुहा, फतेहपुर

बाल साहित्य सृजन

1 हवाई जहाज

वायु यातायात का एक साधन,
कहलाता है हवाई जहाज।
बिना पंख के भी होती है,
जिसकी बहुत ऊँची परवाज़।।

मीलों का सफर द्रुत गति से कराता,
मंजिल पर जल्दी पहुँचाता।
भरता ऊँचे आसमान में उडारी,
देश-विदेश की सैर कराता।।

रचना-
जितेन्द्र कुमार (स०अ०)
प्रा० वि० धनौरा सिल्वर नगर-1
बागपत, बागपत

2 बस

चार पहियों की हवादार होती,
अन्दर सीटों पर गद्दी लगी होती।
बैठती सवारी जिस रास्ते वो चलती,
बदलती रास्ता, दिशा भी बदलती।।

आगे दाहिनी तरफ ड्राइवर सीट होती,
बाँयी तरफ से सवारियाँ हैं चढ़ती।
जिसे जहाँ पहुँचना सफर वो कराती,
गन्तव्य पर पहुँचकर प्रसन्नता मिल जाती।।

रचना-
नैमिष शर्मा (स०अ०)
उच्च प्रा० विद्यालय (1-8)- तेहरा
विकास खण्ड व जनपद- मथुरा

3 नाव

मैंने बनायी देखो,
एक छोटी सी नाव।
लहर-लहर यह जाये,
जो पानी को पाये।।

कहते इसको कश्ती,
जो चलाए वो मल्लाह।
जब हम इस पर बैठें,
तब करते हैं हल्ला।।

रचना-
शहनाज़ बानो (स०अ०)
उ० प्रा० वि० भौंरी,
मानिकपुर, चित्रकूट

4 रेलगाड़ी

छुक-छुक, छुक-छुक रेलगाड़ी,
बच्चों को तो लगती प्यारी।
आगे इंजन, डिब्बे पीछे,
पूरी रेलगाड़ी खींचे।।

टिकट लेकर करो सफर,
खो ना जाना इधर-उधर।
किसी से लेकर खाना मत,
अपना ध्यान बंटाना मत।।

रचना-
हेमलता गुप्ता (स०अ०)
प्रा०वि० मुकन्दपुर,
लोधा, अलीगढ़

बाल साहित्य सृजन

1

प्रिय विषय विज्ञान

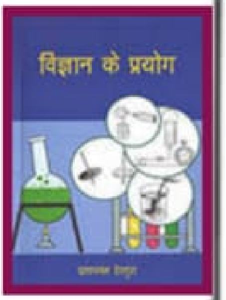

किसी भी विषय के क्रम बद्ध,
ज्ञान को विज्ञान कहा जाता है।
इससे हमारे ज्ञान में वृद्धि एवं,
हमारा विकास होता जाता है।।

हर पल हम विज्ञान में जीते,
इससे हम बहुत प्रेम करते।
जिधर भी हमारी नजर पड़ती,
विज्ञान की ही खोजें दिखती।।

रचना-
माला सिंह (स०अ०)
क० वि० भरौटा
सरधना, मेरठ

2

प्रिय विषय इतिहास

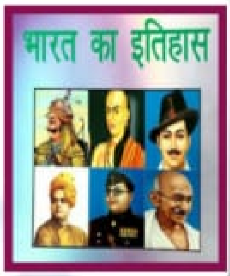

इतिहास मेरा है विषय खास,
मेरे दिल के यह बहुत पास।
प्राचीन युगों का देता ज्ञान,
जिससे थे हम सब अनजान।।

शूरवीरों की इसमें कहानियाँ,
इतिहासकारों की है जुबानियाँ।
बहुत सी अदभुत बातों की,
इससे मिलती हैं जानकारियाँ ।।

रचना-
इला सिंह (स०अ०)
उ० प्रा० वि० पनेरूवा
अमौली, फतेहपुर

3

प्रिय विषय अंग्रेजी

सभी विषयों मेरा सबसे प्यारा,
अंग्रेजी भाषा विषय हमारा।
पल में मैडम को ए टू जेड सुनाता,
गुड सुनते ही मैं खुश हो जाता।।

ए फॉर एप्पल, सी फॉर केक,
सुनकर मुँह में पानी आता।
कक्षा में अंग्रेजी बुक पढ़कर,
अपना मान उत्साह से बढ़ाता।।

रचना-
नीलम भास्कर (स०अ०)
उ० प्रा० वि० सिसाना,
बागपत

4

प्रिय विषय गणित

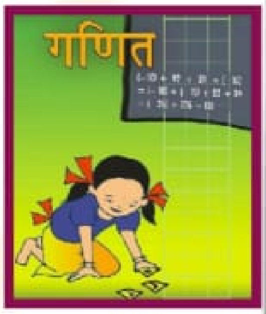

अंको का खेल जिसमें,
है गणित विषय हमारा।
होता सब विषयों में,
सबसे रोचक और न्यारा।।

काम नहीं गणित में रटने का,
है जोड़, घटा, गुणा, भाग इसमें।
करते प्रयोग नियमों, सूत्रों का,
हम सब गणित विषय में।।

रचना-
आरती यादव (स०अ०)
प्रा० वि० रनियां प्रथम
सरवनखेड़ा, कानपुर देहात

मिशन शिक्षण संवाद
• आओ हाथ से हाथ मिलाएँ • मिशन शिक्षण संवाद • बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएँ •
08.07.2021 गुरुवार

बाल साहित्य सृजन

1 गौरैया

मेरे घर आती एक गौरैया,
मीठा गाना सुनाती है।
छोटे- छोटे पंख है उसके,
फुर्र से उड जाती है।।

घर में जब आती है,
घोंसला रख जाती हैं।
दो बच्चें उसमें रहते हैं,
सर्दी-गर्मी सब सहते हैं।।

रचना
ऊषा रानी (स०अ०)
क० वि० खाता
विकास क्षेत्र-मवाना, मेरठ

2 तोता राम

प्यारे से हैं मिठ्ठू राम,
खाते हैं ये मीठे आम।
राम-राम ये जपते हैं,
खूब प्यारे लगते हैं॥

खूब सारी बातें करते,
सबके मन को भाते हैं।
हरे रंग पर लाल चोंच से,
बड़े ही सुन्दर लगते हैं॥

रचना
शिप्रा सिंह (स०अ०)
उ० प्रा० वि० रूसिया
अमौली, फतेहपुर

3 कबूतर

प्यारा सा है एक कबूतर,
आता है मेरी छत पर।
दाना पानी मैं रखती हूँ,
उड़ जाता वो खा पीकर।।

सफेद सलेटी होता है,
मुझको बहुत ही भाता है।
गुँटर गुँटर ये करता है,
जब कोई पास बुलाता है।।

रचना
ज्योति सागर'सना (स०अ०)
उ० प्रा० वि० सिसाना
बागपत, बागपत

4 कोयल

कुहू-कुहू कर गीत गाती है,
कोयल मीठे गीत सुनाती है।
ऋतु बंसत है प्यारा इसको,
प्रियसी सी वह शर्माती है।।

तन काला मन सुन्दर है,
मधुर वचन मन हर्षाती है।
कर्कश वाणी घाव करें,
मधुर बोलो समझाती है।।

रचना
वन्दना यादव 'ग़ज़ल'
प्रा० वि० चन्दवक
डोभी, जौनपुर

बाल साहित्य सृजन

1 साधन यातायात के

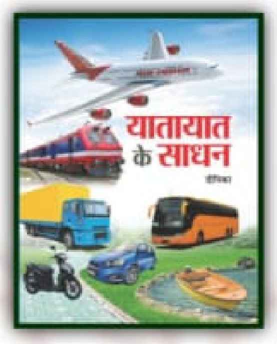

विज्ञान ने किए हैं,
कितने ही आविष्कार।
यातायात के साधन इसने,
दिए हमको मजेदार।।

यहाँ-वहाँ जाने को,
साधन हैं हजार।
बस, रेल, हवाई जहाज,
रिक्शा, स्कूटर, कार।।

रचना-
पूनम गुप्ता "कलिका"
(स०अ०), प्रा०वि० धनीपुर
धनीपुर, अलीगढ़

2 कार

घर में आई नई-नई कार,
हवा के जैसे चलती कार।
नानी के घर जल्दी पहुँचाती,
बिल्कुल भी न देर लगाती।।

पिकनिक जाते, सैर को जाते,
शादी-उत्सव में हम सब जाते।
पापा को ऑफिस ले जाती कार,
हम सबको खूब घुमाती कार।।

रचना-
डॉ० नीतू शुक्ला (प्र०अ०)
मॉ० प्रा० स्कूल बेथर 1
सिकंदरपुर कर्ण, उन्नाव

3 साइकिल

प्यारी-प्यारी मेरी गाड़ी,
कहते जिसे हम साइकिल।
दो पहियों की ये गाड़ी,
घण्टी बजाती साइकिल।।

पैरों से पैडिल मारते,
तालमेल से इसे चलाते।
आगे-पीछे भी बैठाते,
बिना ईंधन आगे बढ़ाते।।

रचना-
अनुप्रिया यादव (स०अ०)
क० वि० काजीखेड़ा
खजुहा, फतेहपुर

4 स्कूटर

देखो मेरा नया स्कूटर,
सबसे जल्दी पहुँचाता।
चलता यह पेट्रोल से,
बिल्कुल ना धुआँ उड़ाता।।

पापा जब जाते बाजार,
साथ में, मैं भी जाता।
स्कूटर की सैर करके,
मुझे खूब मजा आता।।

रचना-
मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

बाल साहित्य सृजन

1 हिन्दी

हिन्दी की टीचर जब आती,
हम बच्चों के मन को भाती।
हमें पढ़ाती रोज कहानी,
कविता भी वो हमें सुनाती।।

हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है,
हम सबके मन की आशा है।
देवनागरी लिपि है इसकी,
भारत की ये परिभाषा है।।

रचना- रूपी त्रिपाठी (स०अ०)
उ० प्रा० वि० लोहारी
सरवनखेड़ा, कानपुर देहात

2 अंग्रेजी

अंग्रेजी विषय कठिन ना है बच्चों,
होता बहुत ही आसान है।
नियमित अभ्यास, उच्च स्वर वाचन से,
हो जाता लिखना, पढ़ना आसान है।

अंग्रेजी बोलना भी सीखो बच्चों,
दिलाती देश-विदेश में पहचान है।
अंग्रेजी समाचार सुनने व पढ़ने से,
हो जाता बोलना आसान है।।

रचना- सुमन पाण्डेय (प्र०अ०)
प्रा० वि० टिकरी-मनौटी
खजुहा, फतेहपुर

3 विज्ञान

विज्ञान ने है किया कैसा चमत्कार,
चाँद तक फैल रहा अपना कारोबार।
प्रकाश चाल से चलता है अब संचार,
पल भर में नप जाता है पूरा संसार।।

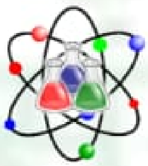

मोबाइल, लैपटॉप ने काम किया आसान,
टी०वी० रेडियो दे रहा नित नया ज्ञान।
अन्तरिक्ष तक जा पहुँचा है अब इंसान,
विज्ञान के क्षेत्र में भारत रचता कीर्तिमान।।

रचना- सुषमा त्रिपाठी (स०अ०)
उ०प्रा०वि०रुद्रपुर खजनी
गोरखपुर

4 गणित

बच्चों! गणित विषय है खास,
सदा समझो इसको आस-पास।
गुणा, भाग, घटाना और योग,
दैनिक जीवन में होता प्रयोग।।

गणित में होता अंको का खेल,
जीरो से लेकर नौ तक होता मेल।
नाप-तौल सब गणित सिखाए,
सही समय देखना अंक बताए।।

रचना- प्रतिमा उमराव (स०अ०)
उच्च प्रा० वि०अमौली (1-8)
अमौली, फतेहपुर

बाल साहित्य सृजन

1

बकरी

हरी घास खाती है बकरी,
हमको दूध पिलाती बकरी।
सुन्दर देखो इसके कान हैं,
में-में है चिल्लाती बकरी।।

घर का बचता खाना जो भी,
उसको चट कर जाती बकरी।
शाकाहारी प्राणी होती है ये,
शाकाहार सिखाती बकरी।।

रचना-
अरविन्द कुमार सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० धवकलगंज,
बड़ागाँव, वाराणसी

2

गाय

गाय एक सीधी-सादी सी,
पालतू पशु होती है।
मीठा-मीठा दूध हमें तो,
गाय सदा देती है।।

कहकर पूजें प्यारी गाय को,
हम सब भारतवासी माता।
गोबर, बछड़े, दूध सभी कुछ,
काम बड़ा है सबके आता।।

रचना-
शिखा वर्मा (इं०प्र०अ०)
उ० प्रा० वि० स्योढ़ा,
बिसवाँ, सीतापुर

3

बन्दर

बन्दर घूमें इधर-उधर,
होता नहीं कोई भी घर।
खौं-खौं करके दाँत दिखाते,
देखके इनको लगता डर।।

बहुत दूर छलाँग लगा दे,
एक पेड़ से दूजे पर
खाने की चीजों को देखें,
मारे झपट्टा हर बन्दर।।

रचना-
रीना काकरान (स०अ०)
प्रा० वि० सालेहनगर,
जानी, मेरठ

4

बिल्ली

बिल्ली बोली म्याऊँ-म्याऊँ,
चूहे को मैं कैसे खाऊँ?
बिल से बाहर न आता है,
मेरा मन तो ललचाता है।।

दूध से पेट नहीं अब भरता,
भूख से मेरा पेट तड़पता।
चूहे को ही आज खाऊँगी,
तभी चैन की साँस पाऊँगी।।

रचना-
मन्जू शर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० नगला जगराम,
सादाबाद, हाथरस

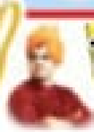

13-07-2021 मंगलवार

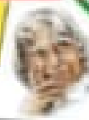

बाल साहित्य सृजन

1

दूध

दूध बनाता शक्तिशाली,
चेहरे की बढ़ जाए लाली।
कभी भूख जब तेज लगी हो,
पेट भरे जो होता खाली।।

सुबह-शाम को दूध पियो सब,
दूध बनाए सेहत हमारी।
इस में हल्दी मिल जाए तो,
औषधि बनती लाभकारी।।

रचना-
हेमलता गुप्ता (स०अ०)
प्रा०वि० मुकन्दपुर,
लोधा, अलीगढ़

2

दही

जल्दी से आओ दही जमाएँ,
उससे व्यंजन खूब बनाएँ।
दूध से हम दही बनाते,
छोटे-बड़े शौक से खाते।।

ठण्डे दही से लस्सी बनाते,
दही-बड़े में चाव से खाते।
दही से सेहत भरपूर पाते,
छाछ बनाकर हम पी जाते।।

रचना-
शहनाज़ बानो (स०अ०)
उ० प्रा० वि० भौंरी,
मानिकपुर, चित्रकूट

3

मक्खन

दूध का हम तो दही जमाते,
मथकर उससे 'मक्खन' पाते।
दिमाग को मक्खन ताकत देता,
सुबह-सवेरे इसको खाते।।

मक्खन से ही 'घी' बन जाता,
मिठाई बनाने में काम आता।
शक्ति से होता भरपूर,
शारीरिक दुर्बलता करता दूर।।

रचना-
नैमिष शर्मा (स०अ०)
उच्च प्रा० विद्यालय (1-8)- तेहरा
विकास खण्ड व जनपद- मथुरा

4

घी

'घी' पौष्टिक स्वास्थ्य बर्धक होता,
स्वाद, सुगन्धित खाने में होता।
शुद्ध बहुत ताकत देता है,
सेहत अच्छी कर देता है।।

राजा, मुन्ना, सोनू, आओ,
सब्जी-दाल में घी ड़लवाओ।
सुगन्धित करता यह भोजन को,
बने मिठाई स्वाद से खाओ।।

रचना-
जितेन्द्र कुमार (स०अ०)
प्रा० वि० धनौरा सिल्वर नगर-1
बागपत, बागपत

• आओ हाथ से हाथ मिलाएँ • मिशन शिक्षण संवाद • बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएँ •
14 जुलाई 2021 बुधवार

बाल साहित्य सृजन

1

गुलाब

फूलों में है फूल अनेक,
फूलों की बात निराली है।
इन्हीं में है एक फूल गुलाब,
खुशबू इसकी मोहने वाली है।।

चैती, बसरा या हो दमिश्क,
हर प्रजाति मन को लुभाती है।
नूरजहाँ हो या चाचा नेहरू जी,
इसकी खुशबू सभी को भाती है।।

रचना-
इला सिंह (स०अ०)
उ० प्रा० वि० पनेरूवा
अमौली, फतेहपुर

2

चमेली

बेल रूपी चमेली का पौधा,
सफेद रंग का फूल है होता।
पत्ते इसके हरे और चिकने,
बागों में सुंदर छटा बिखेरते।।

इसकी खुशबू मोहित करती,
महिलायें इससे श्रृंगार है करती।
फूलों से इसके इत्र भी है बनता,
मुझको यह मनमोहक लगता।।

रचना-
नीलम भास्कर (स०अ०)
उ० प्रा० वि० सिसाना,
बागपत

3

कमल

कमल का फूल,
होता प्रतीक पवित्रता का।
कहते इसे राष्ट्रीय फूल,
हमारे भारत का।।

खिलकर कीचड़ में,
बिखेरता यह खुशबू को।
मिला भारतीय संस्कृति में,
खास स्थान कमल को।।

रचना-
आरती यादव (स०अ०)
प्रा० वि० रनियां प्रथम
सरवनखेड़ा, कानपुर देहात

4

गेंदा

गेंदे के सुन्दर-सुन्दर फूल,
कई रंगों के होते हैं।
खेतों में हो चाहे गमलों में,
सबके मन को लुभाते हैं।।

एक-एक फूलों को चुनकर,
इनकी मालाएँ बनाई जाती हैं।
मन्दिरों में, शव यात्रा पर,
सम्मान में प्रयोग की जाती हैं।।

रचना-
माला सिंह (स०अ०)
क० वि० भरौटा
सरधना, मेरठ

बाल साहित्य सृजन

1 तना

पेड़-पौधे का वह भाग,
जो जमीन के ऊपर रहता है।
शाखाएँ, पत्ते, फूल, फल,
तना पर निर्भर रहता है।।

बहुत पौधे के तने,
जमीन के नीचे उगते हैं।
अदरक, आलू ऐसा ही तना,
जो सब्जी में पकते हैं।।

रचना
ऊषा रानी (स०अ०)
कम्पोजिट विद्यालय खाता
विकास क्षेत्र-मवाना, मेरठ

2 पत्ती

हर पौधे में होती पत्ती,
हरे रंग की होती पत्ती।
केले के पेड़ पर बहुत बड़ी,
नीम की छोटी होती पत्ती।।

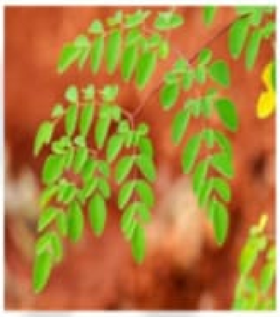

पतझड़ में झड़ जाती पत्ती,
पौधे को सुन्दर बनाती पत्ती।
मेरी किताब में है लिखा,
पौधे का भोजन बनाती पत्ती।।

रचना
ज्योति सागर (स०अ०)
उ० प्रा० वि० सिसाना
बागपत, बागपत

3 फूल

हाँ मैं हँसता हुआ फूल हूँ,
सबके जीवन को महकाता हूँ।
भौंरों और तितलियों के मन को,
मैं तो बहुत ही भाता हूँ॥

सीखो तुम भी मुझसे कुछ,
ना निराश हो तुम कभी।
काँटों के बीच में रहकर भी,
निराश न होता मैं कभी॥

रचना
शिप्रा सिंह (स०अ०)
उ० प्रा० वि० रूसिया
अमौली, फतेहपुर

4 जड़

जड़ पौधे की नींव होती है,
भूमि के नीचे पाई जाती है।
छोटे-छोटे रोए सतह पर होते हैं,
जिन्हें हम 'मूलरोम' कहते हैं।।

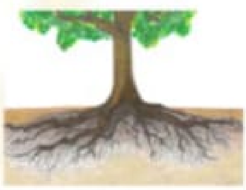

पौधों को ताकत, ऊर्जा जड़ से मिलती है,
पोषक तत्व मिट्टी से अवशोषित करती है।
गाजर, शलजम, मूली जड़ के भाग होती हैं,
बरगद की लटकी जड़े उन्हें सहारा देती है।।

रचना
वन्दना यादव 'ग़ज़ल' (स०अ०)
अभि० प्रा० वि० चन्दवक,
डोभी, जौनपुर

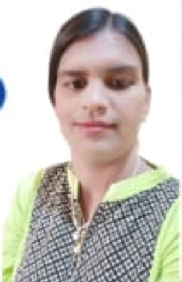

16/07/21

बाल साहित्य सृजन

शुक्रवार

1

पौधे

यह वर्षा का समय,
नभ में बादल छाते हैं।
सारे लोग यहाँ-वहाँ,
पौधे लगाते हैं।।

हरे-हरे पौधों पर,
जब फूल आते हैं।
देख के फूलों को,
सब बच्चे हर्षाते हैं।।

रचना-
पूनम गुप्ता "कलिका"(स०अ०)
प्रा०वि० धनीपुर, धनीपुर,
अलीगढ़

2

तुलसी

आस्था और विश्वास है तुलसी,
पावन और चमत्कारी तुलसी।
घर के आँगन की शोभा तुलसी,
अथाह गुणों की खान है तुलसी।।

'क्वीन ऑफ हर्ब्स' कहलाती,
कई रोगों से हमें बचाती।
सर्दी, खाँसी में आराम दिलाती,
चाय का भी स्वाद बढ़ाती।।

रचना-
डॉ० नीतू शुक्ला (प्र०अ०)
मॉ० प्रा० स्कूल बेथर 1
सिकंदरपुर कर्ण, उन्नाव

3

नीम

नीम एक पर्णपाती वृक्ष,
जो स्वाद में कड़वी होती।
फूल, पत्ती, और टहनियाँ,
सभी इसकी उपयोगी होती।।

नीम वृक्ष स्वास्थ्यवर्धक होता,
शरीर को निरोगी बनाता।
औषधियों का राजा कहलाता,
प्रतिरोधक क्षमता भी बढ़ाता।।

रचना-
अनुप्रिया यादव (स०अ०)
क० वि० काजीखेड़ा
खजुहा, फतेहपुर

4

बरगद

बहुत विशाल पेड़ है बरगद,
घनी छाँव देता है बरगद।
औषधीय गुणों से भरपूर,
भारत का राष्ट्रीय वृक्ष है बरगद।।

हिन्दू धर्म में विशेष पूजनीय,
वट वृक्ष कहलाता है बरगद।
हर भाग इसका उपयोगी,
आयुर्वेद में काम आता बरगद।।

रचना-
मृदुला वर्मा (स0अ0)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

· आओ हाथ से हाथ मिलाएं · **मिशन शिक्षण संवाद** · बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएं ·

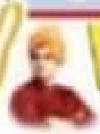

17.07.2021

बाल साहित्य सृजन

शनिवार

1

गाँव

गाँव का जीवन है शान्तिदायक,
हमारी संस्कृति का है परिचायक।
गाँव हमारी कृषि के आधार है,
देखो खेतों में पकी फसलें तैयार हैं।।

मिट्टी की खुशबू हवा में व्याप्त है,
भीड़ कम व ऑक्सीजन पर्याप्त है।
गाँव मे उत्सवों की धूम होती है,
यहाँ भारत की असली तस्वीर दिखती है।।

रचना- रूपी त्रिपाठी (स०अ०)
उ० प्रा० वि० लोहारी
सरवनखेड़ा, कानपुर देहात

2

जिला

प्रमुख प्रशासनिक इकाई होता,
कई गाँवों से मिलकर बनता।
तालुकाओं, तहसीलों, प्रखण्डों को,
जोड़कर जिला है बनता।।

सर्वोच्च प्रशासनिक अधिकारी,
होता जिले का जिलाधिकारी।
लेह भारत का सबसे बड़ा जिला,
उत्तर प्रदेश में जिले हैं सर्वाधिक।।

रचना- सुमन पाण्डेय (प्र०अ०)
प्रा० वि० टिकरी-मनौटी
खजुहा, फतेहपुर

3

प्रदेश

व्यवस्थित शासन के लिए भारत में,
द्वितीय स्तर की यह महत्वपूर्ण इकाई।
राज्य, प्रान्त या प्रदेश कहते जिसे,
देश या राष्ट्र के बाद की मुख्य इकाई।।

अंग्रेजी शासन से स्वतन्त्र हुआ जब भारत,
प्रदेश या राज्य शब्द का तब हुआ प्रयोग।
राज्य शब्द का प्रयोग हुआ संविधान में,
निश्चित क्षेत्र और उद्देश्य का होता योग।।

रचना- प्रतिमा उमराव (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० अमौली (1-8)
अमौली, फतेहपुर

4

देश

ऋतु प्रधान है देश मेरा,
शस्य श्यामला भूमि।
प्रकृति गोद में इसका डेरा,
सागर पखारे रजधूलि।।

विविधता भरा वातावरण,
एकता है इसकी शान।
समृद्ध सुसंस्कृत पर्यावरण,
भारत का ऊँचा मान।।

रचना- सुषमा त्रिपाठी (स०अ०)
उ० प्रा० वि० रुद्रपुर खजनी
गोरखपुर

आपका दिन शुभ हो..

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण.
शिकायत या सुझाव के लिए व्हाट्सएप करें. 94582 78429

संकलन
काव्यांजलि टीम
मिशन शिक्षण संवाद

· आओ हाथ से हाथ मिलाएँ · **मिशन शिक्षण संवाद** · बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएँ ·

19.7.2021

सोमवार

बाल साहित्य सृजन

1 टमाटर

मैं हूँ गोल-मटोल टमाटर,
लाल रंग का देखो खाकर।
खट्टा-मीठा स्वाद निराला,
सभी सब्जियों में मैं आला।।

विटामिन्स होते भरपूर,
कच्चा खाना मुझे जरूर।
रंग और गुण दोनों न्यारे,
खाओ टमाटर बच्चों प्यारे।।

रचना
शिखा वर्मा (इं०प्र०अ०)
उ० प्रा० वि० स्योढ़ा, बिसवाँ, सीतापुर

2 आलू

मैं हूँ आलू गोल-गोल,
सब्जियों का राजा।
हर सब्जी के साथ मैं बनता,
हर कोई मुझको खाता।।

हर घर के कोने में मैं,
रहता हूँ बहुतायत से।
कार्बोहाइड्रेट पोषक तत्व,
मिलता मुझको खाने से।

रचना
अरविन्द कुमार सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० धवकलगंज, बड़ागाँव, वाराणसी

3 बैंगन

बैंगन राजा, बैंगन राजा,
मोटे, गोल, लम्बे, ताजा।
बैंगनी कुर्ता है पहना,
हरा ताज सिर का गहना।।

आलू के संग पकते हो,
भर्ते में भी सजते हो।
सेहत सबकी बनाते हो,
बीमारी से बचाते हो।।

रचना
रीना काकरान (स०अ०)
प्रा० वि० सालेहनगर, वि० क्षेत्र- जानी, मेरठ

4 काशीफल

कोलेस्ट्राल को कम करता,
लोग कहें मुझे कद्दू दादा।
मधुमेह के रोगी भी मेरा,
सेवन करते हैं ज्यादा।।

बीटा केरोटीन की मात्रा,
बच्चों मुझमें पायी जाती।
काशीफल भी नाम है मेरा,
मेरी सब्जी सबको भाती।।

रचना
मन्जू शर्मा (स०अ०)
प्रा०वि० नगला जगराम, सादाबाद, हाथरस

आपका दिन शुभ हो..

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण.

शिकायत या सुझाव के लिए व्हाट्सएप करें.. 94582 78429

संकलन
काव्यांजलि टीम
मिशन शिक्षण संवाद

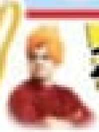

20-07-2021

बाल साहित्य सृजन

मंगलवार

1 ठण्डी हवा

ठण्डी-ठण्डी हवा चली,
सबके मन को खुशी मिली।
प्रकृति देती हवा सुहानी।
मन को लगी बड़ी लुभानी।।

गर्मी हमको जब सताती,
ठण्डी हवा मन को भाती।
सबके मन को राहत आती,
पत्ती-पत्ती झूम जाती।।

रचना-
शहनाज़ बानो (स०अ०)
उ० प्रा० वि० भौंरी,
मानिकपुर, चित्रकूट

2 पंखा

गर्मी में यह काम आता,
सबके मन को खूब भाता।
गर्मी जब भी हमें सताए,
पंखा तब जल्दी से चलाएँ।।

हाथ से भी झलता पंखा,
बिजली से भी चलता पंखा।
ठण्डी हवा खिलाता पंखा,
मीठी नींद सुलाता पंखा।।

रचना-
हेमलता गुप्ता (स०अ०)
प्रा०वि० मुकन्दपुर,
लोधा, अलीगढ़

3 कूलर

कूलर विद्युत चालित यन्त्र है,
जो हमको ठण्डी हवा है देता।
इसमें हवा के मोटर के साथ,
एक पानी का मोटर भी होता।।

हवा की पंखुड़ियों के पीछे,
पानी की फुहार जब पड़ती।
उसकी ठण्डी हवा गर्मी में,
हमको बहुत शीतलता देती।।

रचना-
जितेन्द्र कुमार (स०अ०)
प्रा० वि० धनौरा सिल्वर नगर-1
बागपत, बागपत

4 ए० सी०

बिण्ड़ो, स्प्लिट-एअर-कण्डीशनर,
ए० सी० कहलाता।
गर्म हवा को बाहर करे,
ठण्ड़ी देता जाता।।

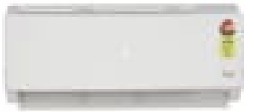

विद्युत लोड़ बहुत लेता,
ठण्ड़क कर पाता।
कमरे की नमी बाहर,
निकालता ही जाता।।

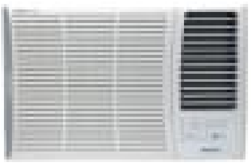

रचना-
नैमिष शर्मा (स०अ०)
उच्च प्रा० विद्यालय (1-8)- तेहरा
विकास खण्ड व जनपद- मथुरा

21 जुलाई 2021

बाल साहित्य सृजन

बुधवार

1

नदी

नदी निकलती है पर्वत से,
ताज़गी भरती हमारे जीवन में।
यह तो है निर्मल और दानी,
देती रहती हम सबको पानी।।

प्राकृतिक स्त्रोत धरती पर जल का,
सींचे जीवन पेड़ों और जीवों का।
गंगा, यमुना, सरस्वती है इनके नाम,
सबको जीवन देते रहना इनका काम।।

रचना-
नीलम भास्कर (स०अ०)
उ० प्रा० वि० सिसाना,
बागपत

2

समुद्र

प्राकृतिक जल स्रोतों में,
प्रमुख स्थान समुद्र का।
मिलता भण्डारण इसमें,
ढेर सारे खारे पानी का।।

घेरे यह चारों ओर से।
हमारी प्यारी पृथ्वी को,
समुद्री परिवहन से,
जोड़ते हम देश दुनिया को।।

रचना-
आरती यादव (स०अ०)
प्रा० वि० रनियां प्रथम
सरवनखेड़ा, कानपुर देहात

3

तालाब

कृत्रिम एवं प्राकृतिक दोनों,
प्रकार के तालाब पाए जाते हैं।
पोखर, जोहड़ पोन्ड, जलाशय,
नामों से भी जाने जाते हैं।।

तालाबों का उपयोग पशुओं,
के नहाने, पानी पीने में होता है।
इनमें मछली पालन के साथ,
सिंघाड़े का उत्पादन होता है।।

रचना-
माला सिंह (स०अ०)
क० वि० भरौटा
सरधना, मेरठ

4

झील

आओ, बच्चों बैठो नाव पर,
करने चले झील की सैर।
कितने सुन्दर कमल खिले,
बतखें भी इसमें रही तैर।।

कितना शान्त झील का जल,
इसमें ना डालो तुम अपने पैर।
झील से वातावरण सुन्दर लगता,
लो अब पूरी हुई झील की सैर।।

रचना-
इला सिंह (स०अ०)
उ० प्रा० वि० पनेरूवा
अमौली, फतेहपुर

• आओ हाथ से हाथ मिलाएँ • मिशन शिक्षण संवाद • बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएँ •

22-07-2021 गुरुवार

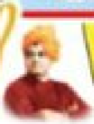

बाल साहित्य सृजन

1 साइकिल

दो पहियों पर चलती है,
अपनी ये सवारी।
मोना, पिंकी, चिंकी, रिंकी,
सबके लिए है प्यारी॥

घूम-घूम कर सैर कराती,
अपनी ये प्यारी साइकिल।
बिन पेट्रोल, डीजल के चलती,
अपनी ये न्यारी साइकिल॥

रचना:-
शिप्रा सिंह (स०अ०)
उ० प्रा० वि० रूसिया
अमौली, फतेहपुर

3 कार

काली, नीली और पीली,
ये मेरी प्यारी कारें है।
चार पहिए है इसके,
हार्न देती ये कारें है॥

ए०सी०, म्युजिक सब इसमें,
सड़क पर दौड़े ये कारें हैं।
पेट्रोल, डीजल से चलती,
इलेक्ट्रॉनिक ये कारें है॥

रचना:-
ऊषा रानी (स०अ०)
उ० प्रा० वि० खाता
मवाना, मेरठ

2 रेल

दूर देश से आती-जाती रेल,
सरपट चलती जाती रेल।
छुक-छुक कर आवाज लगाये,
सबको घर पहुँचाती रेल॥

डिब्बें कई संग में रखती,
इंजन संग दौड़ लगाती रेल।
अमीर-गरीब या हो विदेशी,
सबको ही गले लगाती रेल॥

रचना:-
वन्दना यादव 'ग़ज़ल' (स०अ०)
अभि० प्रा० वि० चन्दवक
डोभी, जौनपुर

4 बस

बस होती है बहुत बड़ी,
रोज़ मैं इसमे जाती हूँ।
एक टिकट लेती हूँ,
स्कूल पहुँच जाती हूँ॥

दूर-दूर तक पहुँचा देती,
बस निराली होती है।
सबकी पसन्द की सीट
तो खिड़की वाली होती है॥

रचना:-
ज्योति सागर (स०अ०)
उ० प्रा० वि० सिसाना
बागपत, बागपत

मिशन शिक्षण संवाद
• आओ हाथ से हाथ मिलाएँ • • बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएँ •
23/07/21 शुक्रवार

बाल साहित्य सृजन

1
पापा

मैं पापा का प्यारा हूँ,
उनका राज दुलारा हूँ।
खेल खेलते संग मेरे,
उनकी आंखों का तारा हूँ।।

पापा जब बाजार जाते,
साथ मुझे भी वो ले जाते।
कांधे पर वो मुझे बिठाते,
मेले की फिर सैर कराते।।

रचना-
पूनम गुप्ता "कलिका"(स०अ०)
प्रा०वि० धनीपुर, धनीपुर,
अलीगढ़

2
माँ

माँ है मेरी कितनी प्यारी,
लाड़ सदा लड़ाने वाली।
गोद में अपनी मुझे बिठाती,
लोरी और कहानी सुनाती।।

जब मैं स्कूल से लौट के आऊँ,
गरम-गरम रोटी वो खिलाती।
गलती जब भी मैं करता हूँ,
प्यार से मुझको वो समझाती।।

रचना-
डॉ० नीतू शुक्ला (प्र०अ०)
मॉ० प्रा० स्कूल बेथर 1
सिकंदरपुर कर्ण, उन्नाव

3
भाई

भाई मेरा बहुत प्यारा,
बहुत प्यार वो मुझसे करता।
हर कदम पर बनकर सहारा,
हमेशा मेरा ध्यान रखता।।

लड़ता-झगड़ता रोज मुझसे,
हमेशा मुझे परेशान भी करता।
मीठी नोंक-झोंक करता मुझसे,
पर मेरी खुशी का ध्यान रखता।।

रचना-
अनुप्रिया यादव (स०अ०)
क० वि० काजीखेड़ा
खजुहा, फतेहपुर

4
दीदी

दीदी मेरी सबसे प्यारी,
सबसे अच्छी, सबसे न्यारी।
खूब प्यार वो मुझसे करती,
हर फरमाइश पूरी करती।।

मेरा पूरा ध्यान रखती,
हर दम मेरे साथ रहती।
दीदी जब बाजार जाती,
ढेर सारे खिलौने लाती।।

रचना-
मृदुला वर्मा (स0अ0)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

मिशन शिक्षण संवाद

· आओ हाथ से हाथ मिलाएँ · · बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएँ ·

24.07.2021 शनिवार

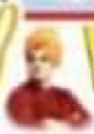

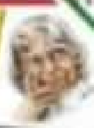

बाल साहित्य सृजन

1 बुद्ध

आठ ग्रहों में सबसे छोटा,
सूर्य से सबसे निकट बुध ग्रह।
परिक्रमण काल 88 दिन है,
हरे रंग का दिखता बुध ग्रह।।

अक्ष का सबसे कम झुकाव,
तापमान का होता उतार-चढ़ाव।
बुध की कक्षा सबसे चपटी,
मौसम का ना होता कोई अनुभव।।

रचना-
सुमन पाण्डेय (प्र०अ०)
प्रा० वि० टिकरी-मनौटी
खजुहा, फतेहपुर

2 शुक्र

चमक-दमक में सबसे न्यारा,
कहलाता है भोर का तारा।
गर्म ग्रहों में है इसका स्थान,
462° सेल्सियस है इसका तापमान।।

आकार में है पृथ्वी के समान,
पृथ्वी जैसा है इसका द्रव्यमान।
बुध व पृथ्वी के बीच है इसका स्थान,
सुन्दरता से जुड़ा है इसका नाम।।

रचना-
रूपी त्रिपाठी (स०अ०)
उ० प्रा० वि० लोहारी
सरवनखेड़ा, कानपुर देहात

3 पृथ्वी

कितनी प्यारी धरा हमारी,
जीवन जिस पर पाया जाता।
शस्य श्यामला इसकी क्यारी,
देख सभी का मन हर्षाता।।

नीले जल पर तैर रही है,
ऑक्सीजन भरपूर यहीं है।
सभी ग्रहों में श्रेष्ठ यही है,
संसाधन की कमी नहीं है।।

रचना-
सुषमा त्रिपाठी (स०अ०)
उ० प्रा० वि० रुद्रपुर खजनी
खजनी, गोरखपुर

4 मंगल

सौरमंडल में चौथा ग्रह है मंगल,
लाल रंग का है यह ग्रह मंगल।
स्थलीय धरातल है इस ग्रह का,
वातावरण है इसका विरल।।

सबसे ऊँचा पर्वत ओलम्पस मून,
स्थित है इस रक्तिम मंगल ग्रह में।
घूर्णन काल और मौसमी चक्र
है समान पृथ्वी की तरह इस ग्रह में।।

रचना-
प्रतिमा उमराव (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० अमौली (1-8)
अमौली, फतेहपुर

आपका दिन शुभ हो..

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण.

शिकायत या सुझाव के लिए व्हाट्सएप करें. 94582 78429

संकलन
काव्यांजलि टीम
मिशन शिक्षण संवाद

बाल साहित्य सृजन

1

छुक- छुक रेल

रेल चली भई रेल चली,
छुक-छुक करती रेल चली।
सरपट दौड़े पटरी पर,
धुआँ उड़ाती दौड़ चली।।

आओ चिंकी, आओ पिंकी,
बैठो मिलकर सारे।
पहुँचायेगी रेल फटाफट,
सबको घर के द्वारे।।

रचना
शिखा वर्मा (इं०प्र०अ०)
उ० प्रा० विद्यालय स्योढ़ा बिसवाँ, सीतापुर

2

हवाई जहाज

हवाई जहाज, हवाई जहाज,
नभ परिवहन अलग है खास।
उड़ता जाता तेजी से हवा में,
दिखता है छोटा हवाई जहाज।।

देश-विदेश की सैर कराए,
नहीं उबाऊ हवाई जहाज।
कम समय में अधिक दूरी जाए,
झटपट पहुँचाए हवाई जहाज।।

रचना
अरविन्द कुमार सिंह (स०अ०)
प्रा०वि० धवकलगंज बड़ागाँव, वाराणसी

3

कार

देखो-देखो आयी कार,
दूरी जल्दी करती पार।
देख इसे खुश हो परिवार,
एक साथ हों पाँच सवार।।

सुन्दर-सुन्दर रंग वाली,
गोल-गोल चार पहिये वाली।
पेट्रोल, डीजल, गैस से चलती,
इसकी सवारी लगती निराली।।

रचना
रीना काकरान (स०अ०)
प्रा० वि० सालेहनगर, जानी, मेरठ

4

साइकिल

मेरी साइकिल नयी नवेली,
गोलू की ये सच्ची सहेली।
पापा जी ने लाकर दी है,
मैने परीक्षा पास की है।।

दो पहिए साइकिल में होते,
पंचर जब होता हम रोते।
दूर-दूर तक ये सैर कराती,
साइकिल दोनों के मन भाती।।

रचना
मन्जू शर्मा (स०अ०)
प्रा०वि० नगला जगराम, सादाबाद, हाथरस

27-07-2021

बाल साहित्य सृजन

मंगलवार

1 दूरदर्शन

ड़ी० ड़ी०, यू० पी० चैनल पर,
प्राईमरी कक्षाओं की पढ़ाई आए।
मैडम, सर हर विषय को समझाते,
बच्चों को टी० वी० में हर पाठ पढ़ाते।।

सुवह नौ बजे से दोपहर एक बजे तक,
विभिन्न विषय, हर-दिन अलग पढ़ाते।
खोलो टी० वी० कॉपी, पैन लेकर बैठो,
जूनियर के विषय भी उसी समय में आते।।

रचना-
नैमिष शर्मा (स०अ०)
उच्च प्रा० विद्यालय (1-8)- तेहरा
विकास खण्ड व जनपद- मथुरा

2 ई-पाठशाला

जब से बन्द हुए स्कूल,
ई-पाठशाला शुरु हुआ।
फेज-1 में बच्चों को,
व्हाट्सएप्प ग्रुप से जोड़ा गया।।

फेज-2 और 3 में वर्कशीट्स,
फेज-4 में दूरदर्शन से पढ़ाया।
फेज-5 में प्रेरणा-साथी का साथ लेकर,
मोहल्ला क्लास चलाया गया।।

रचना-
जितेन्द्र कुमार (स०अ०)
प्रा० वि० धनौरा सिल्वर नगर-1
बागपत, बागपत

3 दीक्षा एप

कूलर विद्युत चालित यन्त्र है,
जो हमको ठण्डी हवा है देता।
इसमें हवा के मोटर के साथ,
एक पानी का मोटर भी होता।।

हवा की पंखुड़ियों के पीछे,
पानी की फुहार जब पड़ती।
उसकी ठण्डी हवा गर्मी में,
हमको बहुत शीतलता देती।।

रचना-
ज्योति विश्वकर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि०- जारी (भाग- 1)
बड़ोखर खुर्द, बाँदा

4 रीड ऐलांग

पढ़ लो बच्चों रीड-एलोंग,
बोले यह नहीं रहता मौन।
मनपसन्द कहानी दिखाये,
हिन्दी अंग्रेजी में पढ़ाये।।

बच्चों को खेल, खिलाता,
आसान, कठिन-शब्द बताता।
गुब्बारे, फोड़ो, पढ़ो, फटाफट,
इनाम दिलाए तुमको झटपट।।

रचना-
शहनाज़ बानो (स०अ०)
उ० प्रा० वि० भौंरी,
मानिकपुर, चित्रकूट

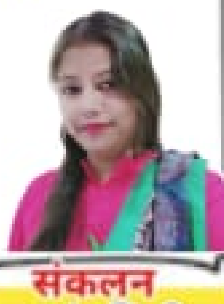

28 जुलाई 2021

बुधवार

बाल साहित्य सृजन

1

शैम्पू

स्वच्छ और सुन्दर बनाएँ,
बालों को हमारा शैम्पू।
रूखे बालों को स्वस्थ बनाएँ,
रखें ध्यान बालों का शैम्पू।।

सिर की सफाई में,
करते उपयोग इसका।
झाग बनाता पानी में,
विनाशक यह गन्दगी का।।

रचना-
आरती यादव (स०अ०)
प्रा० वि० रनियां प्रथम
सरवनखेड़ा, कानपुर देहात

2

टूथपेस्ट

दाँतों को स्वच्छ रखने को,
हम टूथपेस्ट अपनाते हैं।
कई ब्राण्ड के होते हैं ये,
जो बाजार में मिल जाते हैं।।

सुबह शाम टूथपेस्ट करेंगे,
दाँत स्वच्छ, स्वस्थ रहेगें।
जिनसे कोई हानि न हो ऐसे,
टूथपेस्ट हम प्रयोग करेंगे।।

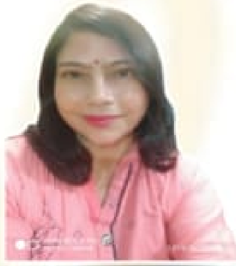

रचना-
माला सिंह (स०अ०)
क० वि० भरौटा
सरधना, मेरठ

3

टूथब्रश

मेरा आया नया टूथब्रश,
नीले रंग का मेरा ब्रश।
दाँतों को रोज चमकाये,
दुर्गन्ध को यह दूर भगाये।।

कोमलता से करे सफाई,
कीटाणुओं की करे धुलाई।
सुबह और शाम इसका काम,
रात में करता यह आराम।।

रचना-
इला सिंह (स०अ०)
उ० प्रा० वि० पनेरूवा
अमौली, फतेहपुर

4

साबुन

साबुन भईया बहुत भले-भले,
कीटाणुओं को मारे बड़े-बड़े।
साबुन से मैं रोज़ मलकर नहाता,
नहाकर मैं स्वच्छ बालक बन जाता।।

बहुत सारी वैराइटी में ये आते,
हर घर की जरूरत कहलाते।
मैडम सिखाती मुझे जरूरी बात,
हाथों को धोकर देना कोरोना को मात।।

रचना-
नीलम भास्कर (स०अ०)
उ० प्रा० वि० सिसाना,
बागपत

• आओ हाथ से हाथ मिलाएँ • **मिशन शिक्षण संवाद** • बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएँ •

29-07-2021

बाल साहित्य सृजन

गुरुवार

1

होली

लाल, पीला, हरा, गुलाबी,
रंगों का है होली त्यौहार।
गिले-शिकवे मिटा कर,
हम सब गले लगते यार॥

अबीर, गुलाल, गुझिया, पापड़,
तरह-तरह के बनते पकवान।
अहम की होलिका जला कर,
प्रेम सौहार्द से बनो धनवान॥

रचना:- वन्दना यादव 'ग़ज़ल' (स०अ०)
अभि० प्रा० वि० चन्दवक
डोभी, जौनपुर

2

दिवाली

जगमग- जगमग दीप जले है,
घर रोशन, मन मीत बने है।
खुशी का त्यौहार आया,
चुन्नू-मुन्नू ने पटाखा जलाया॥

लक्ष्मी-गणेश का पूजन हुआ है,
धन वर्षा आरम्भ हुआ।
अच्छाई ने बुराई को मारा,
जय श्री राम, नाम हुआ है॥

रचना:- ऊषा रानी (स०अ०)
उ० प्रा० वि० खाता
मवाना, मेरठ

3

जन्माष्टमी

नटखट बंशी वाले का,
जन्म सबसे निराला है।
जन्माष्टमी पर देखो,
जन्में राज गोपाला हैं॥

ब्रज के जो वासी है,
मुरली मनोहर वाला है।
वो मोर-मुकुट धारी हैं,
तीनों लोकों का राजा है॥

रचना:- शिप्रा सिंह (स०अ०)
उ० प्रा० वि० रूसिया
अमौली, फतेहपुर

4

रक्षाबन्धन

श्रावन का महीना आया,
पूर्णिमा का चाँद, भी छाया।
रिमझिम अब फुहार पड़ी है,
रक्षासूत्र ले बहन खड़ी है॥

गोल-गोल रंगीन राखी,
सबके मन को भाती राखी।
घर-घर में हर्षोल्लास छाया,
खुशियों का त्यौहार आया॥

रचना:- ज्योति सागर (स०अ०)
उ० प्रा० वि० सिसाना
बागपत, बागपत

बाल साहित्य सृजन

1

दूध

रोज गिलास भर दूध पीता,
दूध पी स्कूल को जाता।
स्वस्थ और मजबूत बनकर,
हर बीमारी को भगाता।।

पोषक तत्व सभी है इसमें,
यह सम्पूर्ण भोजन कहलाता।
गरम पियो या ठण्डा-ठण्डा,
इसका स्वाद सभी को भाता।

रचना-
पूनम गुप्ता "कलिका" (स०अ०)
प्रा०वि० धनीपुर, धनीपुर,
अलीगढ़

2

लस्सी

आओ! पी लें, ठण्डी लस्सी,
ताज़ी और मजेदार लस्सी।
गर्मी को झट दूर भगाती,
ताजगी और ठण्डक है लाती।।

मलाई से भरपूर है लस्सी,
खुशबू वाली सोंधी लस्सी।
मीठे दही से बनती लस्सी,
सबके मन को भाती लस्सी।।

रचना-
डॉ० नीतू शुक्ला (प्र०अ०)
मॉ० प्रा० स्कूल बेथर 1
सिकंदरपुर कर्ण, उन्नाव

3

घी

आओं बच्चों! तुम्हें बतायें,
देशी घी के बारे में।
मलाई-मक्खन से ये बनता,
होता स्वादिष्ट खाने में।।

पोषक तत्वों से भरपूर,
औषधि में भी काम आता।
वसा होती इसमें भरपूर,
पूजा-पाठ में भी काम आता।।

रचना-
अनुप्रिया यादव (स०अ०)
क० वि० काजीखेड़ा
खजुहा, फतेहपुर

4

दही

दही पोषक तत्वों का खजाना,
इसको प्रतिदिन जरूर खाना।
दही खाने का स्वाद बढ़ाता,
पाचन तन्त्र मजबूत बनाता।।

दही में अनेक विटामिन होते,
जो हड्डियों को मजबूत बनाते।
प्रतिदिन जो दही को खाते,
बीमारियों को दूर भगाते।।

रचना-
मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

31.07.2021

बाल साहित्य सृजन

शनिवार

1

ढोलक

घर में जब-जब खुशियाँ आतीं,
सखी सहेली मिलकर गातीं।
ढोलक के संग ताल मिलातीं,
साथ-साथ खुशियाँ छलकातीं।।

ढोलक का है सुन्दर स्वरूप,
गोल-मटोल है इसका रूप।
लोक-संगीत का सजाए साज,
भक्ति गीत में भी निभाए साथ।।

रचना-
रूपी त्रिपाठी (स०अ०)
उ० प्रा० वि० लोहारी
सरवनखेड़ा, कानपुर देहात

2

तबला

ताल वाद्य यन्त्र है तबला,
तक धिना-धिन, करता तबला।
शास्त्रीय संगीत नृत्य के संग,
धूम मचाता गाता तबला।।

बड़ी मधुर तबले की धुन,
जाकिर हुसैन ने लिया इसे चुन।
अल्ला रक्खा खाँ,शिवनरायण जोशी
सबकी पहचान बनीं तबले की धुन।।

रचना-
सुमन पाण्डेय (प्र०अ०)
प्रा० वि० टिकरी-मनौटी
खजुहा, फतेहपुर

3

गिटार

मैं वाद्य यंत्र गिटार हूं,
उंगलियों से खेलता तार हूँ।
मेरी आकृति है बेलनाकार,
मैं सुर से सजी बहार हूँ।।

ग्रीक में हमको कहते कितारा,
रूप परिवर्तित है मेरा सारा।
इलेक्ट्रॉनिक में भी पाया जाता,
सबका हूँ मैं दिल बहलाता।।

रचना-
सुषमा त्रिपाठी (स०अ०)
उ० प्रा० वि० खजनी
खजनी, गोरखपुर

4

हारमोनियम

सुरीली आवाज आती जिससे,
हारमोनियम कहते हैं उसको।
वायु प्रवाह से चलता यह,
यह वाद्य यंत्र भाता है सबको।।

कई तरह की होती चपटी पट्टी,
जिससे निकलते स्वर अलग-अलग।
उंगलियों के दबाव से बजता यह,
बारह स्वर स्केल होते अलग-अलग।।

रचना-
प्रतिमा उमराव (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० अमौली (1-8)
अमौली, फतेहपुर

बाल साहित्य सृजन

1

बरखा रानी

हवा चली पुरवाई है,
बरखा रानी आयी है।
छम-छम पानी के संग,
सबने धूम मचायी है।।

रसोई से खुशबू आयी है,
जीभ चटोरी ललचायी है।
गरम-गरम चाय के संग,
जमकर पकौड़ी खायी हैं।।

रचना-
रीना काकरान (स०अ०)
प्रा० वि० सालेहनगर,
जानी, मेरठ

2

बादल काका

बादल काका उमड़-घुमड़ कर,
काले-पीले रंग दिखाते।
कभी बरसते, कभी गरजते,
धरती गीली हैं कर जाते।।

अजब-अनोखे रूप बनाकर,
सबके मन को हैं हरषाते।
खेतों की प्यासी फसलों को,
जीवन बूँदें देकर जाते।।

रचना-
शिखा वर्मा (इं०प्र०अ०)
उ० प्रा० वि० स्योढ़ा,
बिसवाँ, सीतापुर

3

हवा

सन-सना-सन, सन-सन चलती हवा,
सुन्दर सी मनभावन, लगती हवा।
फसलों को लहराती चंचल हवा,
शीतलता दे जाती, ठण्डी हवा।।

जीवन का आधार, सचमुच हवा,
प्राणवायु कहलाती, निर्मल हवा।
क्या तुमने देखा है? कभी हवा,
ना बाबा, किसी ने ना देखी हवा।।

रचना-
अरविन्द कुमार सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० धवकलगंज,
बड़ागाँव, वाराणसी

4

धरती माँ

धरती सबकी माता है,
इसे प्यार ही आता है।
सोंधी खुशबू है इसकी,
कान्हा माटी खाता है।।

खेती कृषक कराता है,
अन्न यहीं से आता है।
धरती माँ के पेड़ों से,
जग साँसें ले पाता है।।

रचना-
मन्जू शर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० नगला जगराम,
सादाबाद, हाथरस

03-08-2021

मंगलवार

बाल साहित्य सृजन

1 शिक्षक

शिक्षक हूँ मैं एक शिक्षक,
मैं ही राष्ट्र का निर्माता हूँ।
मिटा अशिक्षा के तम को,
ज्ञान का प्रकाश फैलाता हूँ।।

कभी माता, कभी पिता तो,
कभी दोस्त बन जाता हूँ।
कुम्हार की भाँति शिष्यों को,
फिर सही आकार दे पाता हूँ।।

रचना-
जितेन्द्र कुमार (स०अ०)
प्रा० वि० धनौरा सिल्वर नगर-1
बागपत, बागपत

2 डॉक्टर

जब भी हम हो जाते बीमार,
सर्दी-जुकाम या आए बुखार।
तब डॉक्टर से लेते दवाई,
दूर हो दर्द मन खुश हो भाई।।

बीमारी को ठीक वो करते,
गम्भीर रोगों में ऑपरेशन करते।
डॉक्टर रोगी का जीवन बचाते,
कठिन समय में भी कर्तव्य निभाते।।

रचना-
नैमिष शर्मा (स०अ०)
उच्च प्रा० विद्यालय (1-8)- तेहरा
विकास खण्ड व जनपद- मथुरा

3 ड्राइवर

गाड़ी, बस या रेलगाड़ी,
जो इन्हें चलाते हैं।
सबसे आगे सीट पर बैठे,
वह ड्राइवर कहलाते हैं।।

एक जगह से दूसरी जगह,
सुरक्षित हमको पहुँचाते हैं।
लम्बे सफ़र में हम सो जाते,
ये नहीं आँख झपकाते हैं।।

रचना-
शहनाज़ बानो (स०अ०)
उ० प्रा० वि० भौंरी,
मानिकपुर, चित्रकूट

4 दर्जी

साधारण से कपड़ों को,
आकर्षक जो बनाए।
मेहनत से करता है काम,
वही तो दर्जी कहलाए।।

दर्जी की पहचान है ऐसी,
रंग-बिरंगे धागे, कैंची।
सुई और रंगीन चॉक की लाइन ,
कपड़े पर बनाए डिजाइन।।

रचना-
ज्योति विश्वकर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि०- जारी (भाग- 1)
बड़ोखर खुर्द, बाँदा

बाल साहित्य सृजन

1

गणतन्त्र दिवस

गणतन्त्र दिवस हम भारतीय,
राष्ट्रीय पर्व के रुप में मनाते हैं।
इस दिन लालकिला, स्कूलों,
कार्यालयों में झण्डा फैलाते हैं।।

इस दिन भारत का संविधान,
पूरे देश में लागू हुआ था।
हम सब भारतवासियों का,
मानों भाग्य उदय हुआ था।।

रचना-
माला सिंह (स०अ०)
क० वि० भरौटा
सरधना, मेरठ

2

बाल दिवस

14 नवम्बर का दिन आया,
नेहरु जी का जन्मदिन आया।
बच्चों को नेहरू बहुत प्यारे थे,
प्यार से सब चाचा उन्हें बुलाते थे।।

तरह-तरह के कार्यक्रम होते,
बच्चे सुन्दर-सुन्दर उपहार पाते।
इस दिन को बाल दिवस कहते,
नेहरूजी की याद में यह दिन मनाते।।

रचना-
इला सिंह (स०अ०)
उ० प्रा० वि० पनेरूवा
अमौली, फतेहपुर

3

शिक्षक दिवस

शिक्षक दिवस साल में आता,
पाँच सितम्बर बच्चों को भाता।
विद्या का अमूल्य दान दे कर,
शिक्षक कहलाते राष्ट्र निर्माता।।

अक्षरों से परिचित हमें कराते,
शब्दों का अर्थ सरलता से बताते।
अज्ञान रूपी अन्धकार मिटाकर,
हर बच्चे का सफल भविष्य बनाते।।

रचना-
नीलम भास्कर (स०अ०)
उ० प्रा० वि० सिसाना,
बागपत

4

स्वतन्त्रता दिवस

15 अगस्त का दिन खास,
सभी भारतीयों के लिए।
मनाते हम स्वतन्त्रता दिवस,
आजादी के जश्न के लिए।।

दिया बलिदान अपने प्राणों का,
जब भारत के वीर सपूतों ने।
मिली तब आजादी भारत को,
अंग्रेजी शासकों के हाथों से।।

रचना-
आरती यादव (स०अ०)
प्रा० वि० रनियां प्रथम
सरवनखेड़ा, कानपुर देहात

05/08/2021

गुरूवार

बाल साहित्य सृजन

1 चाक

नीले, पीले, हरे, गुलाबी, सफेद,
शब्द-शब्द मोती सा यह लिखते ।
बिन चाक बच्चें लिखना पाये,
गुरु जी के हाथों में चाक दिखते।।

चित्र बनाते, कहानी लिखते इससे
गीत, कहानी, सब समझाते इससे
श्यामपट्ट-चाक की दोस्ती पुरानी
शिक्षा किससे होती शुरू कहानी

रचना-
ज्योति सागर (स०अ०)
उ० प्रा० वि० सिसाना
बागपत, बागपत

2 TLM

रंग-बिरंगे मनमोहक होते TLM
शिक्षा में रोचकता लाते, लगाते मन
बच्चों के मन को भाते हैं यह TLM
गहरी बातों को सरल बना देती TLM

हिंदी, गणित, संस्कृत या हो विज्ञान
हर विषय का इन से होता गुणगान
शिक्षक विद्यार्थी को बांधे रखताTLM
सक्रिय ज्ञान मस्तिष्क में भरता TLM

रचना-
वन्दना यादव 'ग़ज़ल'
अभि० प्रा० वि० चन्दवक,
डोभी, जौनपुर

3 स्कूल

सबसे सुन्दर मेरा स्कूल,
सबसे न्यारा मेरा स्कूल।
ज्ञान का सागर है,
मेरा प्यारा स्कूल।।

चिंकी, पिंकी, के संग,
रोज़ जाते हम स्कूल।
पढ़ाई के संग मस्ती है करते,
हर दिन जाते हम स्कूल।।

रचना-
शिप्रा सिंह (स०अ०)
उ० प्रा० वि० रूसिया
अमौली, फतेहपुर

4 श्यामपट्ट

काला-काला मेरा श्यामपट्ट,
चुन्नू-मुन्नू लिखते श्यामपट्ट।
अ,आ, ई को लिखते जाएं,
अ से अनार को पढ़ते जाएं।।

सुंदर-सुंदर बिल्ली बनी है,
चूहा पकड़े बिल्ली बनी है।
सुलेख में श्यामपट्ट से उतारू,
एक-एक शब्द मोती सा उतारू।।

रचना-
ऊषा रानी (स०अ०)
उ०प्रा०वि० खाता
मवाना , मेरठ

06/08/21 शुक्रवार

बाल साहित्य सृजन

1

क्रिकेट

मम्मी! मुझको बैट दिला दो,
मैं भी क्रिकेट खेलूँगा।
धोनी और सचिन तेंदुलकर,
जैसे छक्के जड़ दूँगा।।

खेलूँगा मैं देश के खातिर,
आज ये मैंने प्रण है लिया।
स्टेडियम में जब खेलूँगा,
गूँजेगा, इण्डिया-इण्डिया।।

रचना-
पूनम गुप्ता "कलिका" (स०अ०)
प्रा०वि० धनीपुर, धनीपुर,
अलीगढ़

2

कबड्डी

आओ खेलें! कबड्डी-कबड्डी,
हो जाओ जल्दी सब रेडी।
दो टीमों में फिर बँट जाओ,
एक दूजे को छूकर आओ।।

एक साँस में कबड्डी बोलो,
चालाकी से एक दूजे को छूलो।
ज्यादा खिलाड़ी जो मार गिराए,
टीम वो विजयी कहलाए।।

रचना-
डॉ० नीतू शुक्ला (प्र०अ०)
मॉ० प्रा० स्कूल बेथर 1
सिकंदरपुर कर्ण, उन्नाव

3

खो-खो

आओं बच्चों! हम सब खेलें,
हमारा स्वदेशी 'खो-खो' खेल।
बिना बैट बॉल के इसे खेले,
स्फूर्ति भरा है खो-खो खेल।।

दो टीमों के खिलाड़ी खेलते,
नौ-नौ खिलाड़ी प्रतिभाग करते।
'खो' कह कर आगे बढ़ते,
और जीतने का प्रयास करते।।

रचना-
अनुप्रिया यादव (स०अ०)
क० वि० काजीखेड़ा
खजुहा, फतेहपुर

4

हॉकी

हॉकी का खेल सबको पसन्द आता,
यह दुनिया भर में खेला जाता।
ग्यारह खिलाड़ी होते इसमें और,
हमारा राष्ट्रीय खेल कहलाता।।

अंग्रेजों द्वारा यह भारत में आया,
स्थान कोलकाता को बनाया।
हॉकी का इतिहास है बड़ा पुराना,
दुनिया ने इसको लोकप्रिय माना।।

रचना-
मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

बाल साहित्य सृजन

1 ढोलक

गोल बनी है लकड़ी की जो,
वाद्य यन्त्र ढोलक कहलाती।
खुशियों या फिर शुभ अवसर पर,
ढोलक खूब बजायी जाती।।

बड़ी सुहानी ध्वनि हो इसकी,
हर घर में है ढोलक सजती।
लोग नाचते धुन पर इसकी,
ढोलक हाथ, छड़ी से बजती।।

रचना
शिखा वर्मा (इं०प्र०अ०)
उ० प्रा० वि० स्योढ़ा,
बिसवाँ, सीतापुर

2 शहनाई

उत्सव का दिन आज है आया,
गूँज उठी फिर शहनाई।
बड़ी सुरीली धुन है इसकी,
खुशहाली मन में छायी।।

हल्की, पतली वाद्य यंत्र यह,
फूँक मारने पर बजती।
शगुन के समय जब भी बाजे,
बहुत ही प्यारी यह लगती।।

रचना
अरविन्द कुमार सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० धवकलगंज,
बड़ागाँव, वाराणसी

3 बाँसुरी

बाँसुरी की टेर निराली,
मनमोहक मधुर धुन वाली।
होठों और अंगुलियों का मेल,
धुन का बनाये तालमेल।।

कानों में रस घोलती है,
मन की बोली बोलती है।
बाँस से यह बनती है,
डण्डी जैसी दिखती है।।

रचना
रीना काकरान (स०अ०)
प्रा० वि० सालेहनगर,
वि० क्षेत्र- जानी, मेरठ

4 हारमोनियम

है प्यारा मेरा हारमोनियम,
इसे बजाती हूँ मैं हरदम।
सात सुरों का सुन्दर मेल,
ध्वनि का होता सारा खेल।।

बक्से जैसा इसका आकार,
हारमोनियम से मुझको प्यार।
सा, रे, गा, मा, प, ध, नि, सा,
बजे सात सुर अमृत जैसा॥

रचना
मन्जू शर्मा (स०अ०)
प्रा०वि० नगला जगराम,
सादाबाद, हाथरस

10-08-2021

बाल साहित्य सृजन

मंगलवार

1 रसगुल्ला

गोल-गोल, मीठे रसगुल्ले,
देख कर मुँह में पानी आए।
बड़े प्यार से मम्मी मेरी,
बना-बना कर मुझे खिलाए।।

डूबे हुए चाशनी में,
रसभरे ये हो जाते हैं।
छोटी-बड़ी हर दावत की,
रसगुल्ले शान बढ़ाते हैं।।

रचना-
ज्योति विश्वकर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि०- जारी (भाग- 1)
बड़ोखर खुर्द, बाँदा

2 बिस्किट

सभी लोग बिस्किट खाते,
बिस्किट कई स्वाद में आते।
कई प्रकार के आकर बनाते,
बिस्किट को बाजार से लाते।।

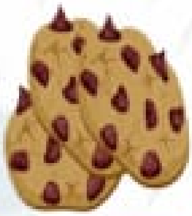

चाय के संग बिस्किट खाओ,
या ऐसे ही सारे खा जाओ।
पौष्टिकता होती इसमें भरपूर,
दोस्तों को खिलाएँ जरुर।।

रचना-
शहनाज़ बानो (स०अ०)
उ० प्रा० वि० भौंरी,
मानिकपुर, चित्रकूट

3 टॉफी

टॉफी बच्चों को अति प्यारी,
रोज चाहते नित-नयी न्यारी।
छोटेपन से ही पहचानें,
टॉफी देख खुश होते भारी।।

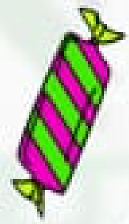

जन्मदिवस पर टॉफी सारी,
लूटने की करते तैयारी।
मुझे दो मिली तुझे मिलीं चार,
करने लगते मारा-मारी।।

रचना-
नैमिष शर्मा (स०अ०)
उच्च प्रा० विद्यालय (1-8)- तेहरा
विकास खण्ड व जनपद- मथुरा

4 चॉकलेट

मोनू बोला अपने पापा से,
घर आने में मत होना लेट।
बाजार अगर आप जाओगे,
तो मेरे लिए लाना चॉकलेट।।

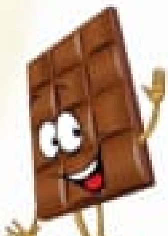

मीठी-मीठी बड़ी स्वादिष्ट,
मुझको लगती है चॉकलेट।
मम्मी न जाने क्यों कहती है?
ज्यादा मत खाना चॉकलेट।।

रचना-
जितेन्द्र कुमार (स०अ०)
प्रा० वि० धनौरा सिल्वर नगर-1
बागपत, बागपत

• आओ हाथ से हाथ मिलाएँ • मिशन शिक्षण संवाद • बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएँ •

11 अगस्त 2021

बुधवार

बाल साहित्य सृजन

1

रेनकोट

बरसात का सुहाना मौसम आया,
मन में भीगने का आनन्द आया।
सोनू मोनू ने अपने रेनकोट पहने,
चले बाहर तेज बारिश में भीगने।।

बारिश का आनन्द ले रहे हैं,
रेनकोट पहन कर घूम रहे हैं।
रंग उनके नीले और हल्के पीले,
इससे उनके कपड़े न होते गीले।।

रचना-
इला सिंह (स०अ०)
उ० प्रा० वि० पनेरूवा
अमौली, फतेहपुर

2

बादल

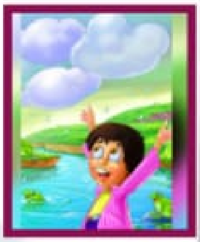

देखो नभ पर काले बादल छाए,
घुमड़-घुमड़ कर शोर मचाए।
बिजली चमकी चम-चम-चम,
पानी बरसा खूब झम-झम-झम।।

सूरज दादा भी लुक-छिप जाते,
घने बादल देख बहुत डर जाते।
गर्मी की जलती-तपती धूप से,
बादल हमें ठण्डी राहत पहुँचाते।।

रचना-
नीलम भास्कर (स०अ०)
उ० प्रा० वि० सिसाना,
बागपत

3

इन्द्रधनुष

आओ बच्चों तुम्हें बताये,
इन्द्रधनुष के बारे में।
आसमान में यह छाये,
बरसात के दिनों में।।

इन्द्रधनुष में दिखता,
मेल सात रंगों का।
सबके मन को लुभाता,
दृश्य इन्द्रधनुष का।।

रचना-
आरती यादव (स०अ०)
प्रा० वि० रनियां प्रथम
सरवनखेड़ा, कानपुर देहात

4

छाता

कई रंगों के छाता होते,
छोटे और बड़े भी होते।
जब बारिश में बाहर निकलते,
छाता अपने संग रख लेते।।

गर्मी में कहीं जाना होता,
तब भी छाता संग में होता।
छाता बहुत उपयोगी होता,
घर में अपने मौजूद होता।।

रचना-
माला सिंह (स०अ०)
क० वि० भरौटा
सरधना, मेरठ

12-08-2021

गुरुवार

बाल साहित्य सृजन

1

शीशा

सच को दर्पण सामने लाता,
झूठा-सच्चा सब दिखलाता।
चुन्नू मुन्नू अपना मूँछ बनाते,
चेहरा रंग कर खुद शर्माते॥

गुड़िया आइना देख कर सजती,
खुद की कमी को खुद समझती।
आईना सा तुम सदा सच्चा बनना,
भविष्य अपना उज्जवल करना॥

रचना:- वन्दना यादव 'ग़ज़ल' (स०अ०)
अभि० प्रा० वि० चन्दवक
डोभी, जौनपुर

2

रुमाल

चार कोनों का एक रुमाल,
सूती कपड़े का है रुमाल।
रंग-बिरंगी फूल, तितली बनी है,
जुकाम में भी साथ देता रुमाल॥

पापा की जेब में रहता
मम्मी के हाथों में रहता।
चिन्टू के स्कूल में जाता,
क, ख, ग, मैं भी पढ़ता॥

रचना:- ऊषा रानी (स०अ०)
उ० प्रा० वि० खाता
मवाना, मेरठ

3

काजल

आँखों पर काजल तो देखो,
कितना सुन्दर लगता है।
नन्हें-मुन्ने बच्चों पर तो,
खूब प्यारा लगता है॥

कई एन्टी बैक्टीरियल गुण,
काजल में पाते जाते हैं।
आँखों में लगाने भर से ही
सारे रोग दूर भाग जातें हैं॥

रचना:- शिप्रा सिंह (स०अ०)
उ० प्रा० वि० रूसिया
अमौली, फतेहपुर

4

कन्घा

अक्सर ही शीशे के
साथ दिख जाता हूँ मैं।
बाल सँवारु सबके,
कन्घा कहलाता हूँ मैं॥

मोटा, पतला, छोटा, लम्बा
कई रूप मे मिल जाता हूँ।
प्लास्टिक हो या लकड़ी
दोनों से ही बन जाता हूँ॥

रचना:- ज्योति सागर (स०अ०)
उ० प्रा० वि० सिसाना
बागपत, बागपत

· आओ हाथ से हाथ मिलाएँ · मिशन शिक्षण संवाद · बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएँ ·
13/08/21 शुक्रवार

बाल साहित्य सृजन

1

राखी

सावन का महीना आया,
रक्षाबन्धन साथ में लाया।
फिर आई बाजार में राखी,
रंग बिरंगी प्यारी राखी।।

राखी मैं, लेकर आऊँगी।
मोती से उसे सजाऊँगी,
भाई की कलाई पर फिर,
प्यार से उसको बाँधूंगी।।

रचना-
पूनम गुप्ता "कलिका" (स०अ०)
प्रा०वि० धनीपुर, धनीपुर,
अलीगढ़

2

तीज

हिन्दू धर्म का खास त्योहार,
हरियाली तीज का यह त्योहार।
महिलाओं को बहुत है भाता,
कजरी तीज भी ये कहलाता।।

झूलों का त्योहार कहलाता,
सावन मास में मनाया जाता।
महिलाऐं पूजा और व्रत करती,
पति की दीर्घायु की कामना करती।।

रचना-
डॉ० नीतू शुक्ला (प्र०अ०)
मॉ० प्रा० स्कूल बेथर 1
सिकंदरपुर कर्ण, उन्नाव

3

नाग पंचमी

सावन मास के महीने में,
आया त्योहार नाग पंचमी।
शुक्ल पक्ष की पंचमी को,
मनाते त्योहार नाग पंचमी।।

नागों की पूजा करते,
घर-घर उन्हें दूध पिलाते।
कार्यक्रमों का आयोजन करते,
पौराणिक कथायें भी सुनाते।।

रचना-
अनुप्रिया यादव (स०अ०)
क० वि० काजीखेड़ा
खजुहा, फतेहपुर

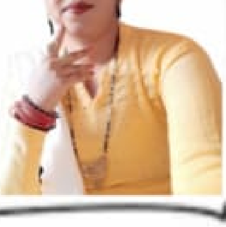

4

सावन

सावन आया झूम के,
सखियाँ नाचे घूम के।
बागों में पड़ गए झूले,
पेड़-पौधे भी खूब फूले।।

चारों ओर हरियाली छाई,
प्यारी मनभावन ऋतु आई।
धरती ने किया श्रृंगार,
सावन की बहार आई।।

रचना-
मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

बाल साहित्य सृजन

1 पुष्प

मधु पराग मुझसे ही आता,
अमृत बीजी पौधा कहलाता।
पंखुड़ियों से सजा दल पुंज,
शोभा बढ़ाता वाह्य दलपुंज।।

सुन्दरता का पर्याय पुष्प है,
औषधि का अभिप्राय पुष्प है।
जीवन का सौन्दर्य पुष्प है,
आय का भी स्रोत पुष्प है।।

सुषमा त्रिपाठी (स०अ०)
उ० प्रा० वि० खजनी
खजनी, गोरखपुर

2 पत्ती

प्रकृति में हरियाली लाती,
धूप में छाँव दे जाती।
वायुमण्डल को शुद्ध बनाती,
पौधे का रसोईघर कहलाती।।

हरा रंग आता है जिससे,
क्लोरोफिल है उसका नाम।
पौधे का भोजन बनाती है पत्ती,
प्रकाश संश्लेषण है इसका काम।।

रूपी त्रिपाठी (स०अ०)
उ० प्रा० वि० लोहारी
सरवनखेड़ा, कानपुर देहात

3 तना

पादप का वायवीय भाग तना,
प्रांकुर से विकसित होता तना।
तने पर निकलतीं हैं शाखाएँ,
पौधे को सहारा देता तना।।

जड़ से पानी और खनिज को,
पत्तियों तक पहुँचाता तना।
पत्तियों द्वारा तैयार भोजन को,
पौधे के सब भागों को भेजता तना।।

सुमन पाण्डेय (प्र०अ०)
प्रा० वि० टिकरी-मनौटी
खजुहा, फतेहपुर

4 जड़

मजबूती मिलती जिससे वृक्ष को,
रहती सदा भूमि के अन्दर जो।
मिलते पोषक तत्व सदा जिससे,
बच्चों, कहते हैं जड़ उसको।।

जल अवशोषित कर भूमि से,
तने से पहुँचाती हर भाग को।
छोटी-छोटी अनेक होती जड़ें,
जड़ कहते हैं इस जड़तन्त्र को।।

प्रतिमा उमराव (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० अमौली (1-8)
अमौली, फतेहपुर

बाल साहित्य सृजन

1

नाना जी

हमारे प्यारे नाना जी,
जल्दी मिलने आना जी।
जब भी आप आते हो,
खूब खुशियाँ लाते हो।।

कहानी खूब सुनाते हो,
चिज्जी खूब दिलाते हो।
हमें घुमाने ले जाते हो,
जान से ज्यादा चाहते हो।।

रचना-
रीना काकरान (स०अ०)
प्रा० वि० सालेहनगर,
जानी, मेरठ

2

दादी जी

पापा की है मम्मी प्यारी,
दादी माँ है वही हमारी।
रोज कहानी हमें सुनातीं,
अच्छे से वह सब समझातीं।।

सुबह-सबेरे हमें जगातीं,
करो प्रार्थना, हैं बतलातीं।
दादी मेरी मुझको प्यारी,
उनकी हम बच्चे फुलवारी।।

रचना-
सतीश चन्द्र (प्र०अ०)
प्रा० वि० अकबापुर,
पहला, सीतापुर

3

नानी जी

नानी के घर जब भी जाते,
खूब मजे हैं हम कर पाते।
खेल-खिलौने मिलते प्यारे,
मिलें खूब गुब्बारे न्यारे।।

नानी मुझपर प्यार लुटाती,
अच्छी-अच्छी बात बताती।।
कैसी दुनिया? कैसे लोग?
कहानियों में सब कह जाती।।

रचना-
अरविन्द कुमार सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० धवकलगंज,
बड़ागाँव, वाराणसी

4

दादा जी

आज मेरे दादा जी आये,
खट्टे-मीठे आम हैं लाये।
बड़ा रसीला, मीठा आम,
खाकर के करना है काम।।

पापा जी के पापा प्यारे,
हम अपने दादू के सहारे।
खेल-खिलौने भी हैं लाते,
दादा हमारे मन को भाते।।

रचना-
मन्जू शर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० नगला जगराम,
सादाबाद, हाथरस

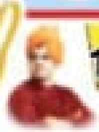

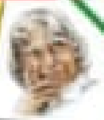

बाल साहित्य सृजन

1 खो-खो

आओ बच्चों खेलें खो-खो,
जल्दी से दो टीम में हों।
एक टीम दौड़ लगाए,
एक टीम बैठ जाए।।

तेजी से तुम दौड़ लगाओ,
बारी-बारी खो देते जाओ।
नियम सही अपनाना है,
विजेता बन कर आना है।।

रचना-
शहनाज़ बानो (स०अ०)
उ० प्रा० वि० भौंरी,
मानिकपुर, चित्रकूट

2 कबड्डी

कबड्डी-कबड्डी बोल-बोल के,
दिखा रहे कैसा दमखम।
सबसे सस्ता सबसे न्यारा,
खेल कबड्डी खेलें हम।।

जन्म हुआ भारत में इसका,
व्यायाम का अच्छा साधन।
तन-मन स्वस्थ बनाए जो,
लगता इसमें न तनिक भी धन।।

रचना-
ज्योति विश्वकर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि०- जारी (भाग- 1)
बड़ोखर खुर्द, बाँदा

3 कैरम

कैरम है एक इनडोर गेम,
जिसमें होती हैं अनेक गोटियाँ।
लकड़ी के वर्गाकार बोर्ड पर,
स्ट्राइकर से निकालते गोटियाँ।।

चार खिलाड़ी खेल सकते हैं,
तीन रंगों की गोटियाँ होती।
काली 10 की, सफेद 20 की,
गुलाबी 50 की जो रानी होती।।

रचना-
जितेन्द्र कुमार (स०अ०)
प्रा० वि० धनौरा सिल्वर नगर-1
बागपत, बागपत

4 लूडो

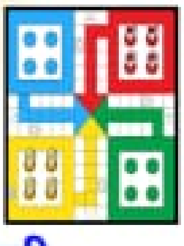

चार-चार गोटी का इण्ड़ोर गेम है,
बच्चों को बहुत ही पसन्द है।
दो बच्चे खेलें या खेलें चार,
तीन भी खेल लेते गोटी मार।।

पासे की छः सतह पर छः गिनती,
एक या छः आने पर गोटी खुलती।
अपने घर से हर गोटी चलती,
कभी मारे, कभी मरती, आगे बढ़ती।

रचना-
नैमिष शर्मा (स०अ०)
उच्च प्रा० विद्यालय (1-8)- तेहरा
विकास खण्ड व जनपद- मथुरा

बाल साहित्य सृजन

1

मेले की सैर

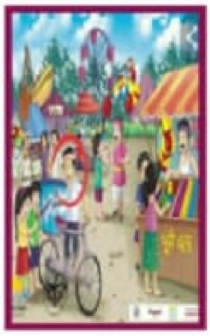

गाँव, कस्बे और शहरों में,
जब भी मेले लगते हैं।
आस पास के लोग मेले की,
सैर खूब मजे से करते हैं।।

बच्चे खेल खिलौने लेते,
खाने की चीज भी लेते।
झूलने की जिद्द करते,
पापा की जेब खाली करते।।

रचना-
माला सिंह (स०अ०)
क० वि० भरौटा
सरधना, मेरठ

2

जंगल की सैर

सोनू-मोनू करने चले जंगल की सैर,
खुशी से उनके जमीं पर नहीं हैं पैर।
जंगल कितना सुन्दर प्यारा-प्यारा,
वन्य जीवों से भरा है न्यारा-न्यारा।।

जंगल के गार्ड उनके साथ हैं आये,
साथ मे दोनों अनेक पकवान लाये।
कितने सुन्दर है जंगल के प्यारे जीव,
इन्हीं से तो है जंगल धरा का सजीव।।

रचना-
इला सिंह (स०अ०)
उ० प्रा० वि० पनेरूवा
अमौली, फतेहपुर

3

बगीचे की सैर

मेरा बगीचा देखो कितना प्यारा,
हरा-भरा और सुन्दर न्यारा।
सुन्दरता फूलों की मन हर ले,
पेड़ों की छाँव शीतलता भर दे।।

परिवार संग इसमें सैर मैं करता,
शुद्ध वायु से शरीर में ऊर्जा भरता।
फूलों को मै कभी नहीं तोड़ता,
इनकी देखभाल मैं स्वयं ही करता।।

रचना-
नीलम भास्कर (स०अ०)
उ० प्रा० वि० सिसाना,
बागपत

4

चिड़ियाघर की सैर

आओ बच्चों तुम्हें कराएँ,
चिड़ियाघर की सैर।
शेर यहाँ दहाड़ लगायें,
करतब करते दिखते बन्दर।।

भिन्न-भिन्न जानवर मिलते,
हमें प्रत्येक चिड़ियाघर में।
सबके मन को लुभाते,
रहते जो जानवर चिड़ियाघर में।।

रचना-
आरती यादव (स०अ०)
प्रा० वि० रनियां प्रथम
सरवनखेड़ा, कानपुर देहात

• आओ हाथ से हाथ मिलाएँ • **मिशन शिक्षण संवाद** • बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएँ •

20/08/21 **शुक्रवार**

बाल साहित्य सृजन

1 दोपहर

पूरे दिन के समय को,
बाँटते हम पहर में।
सुबह उठते, रात को सोते,
और खेलते दोपहर में।।

पर गर्मी की दुपहरी में,
चलती गर्म हवाएँ।
तब घर के अन्दर रहते,
कहीं लू ना लग जाएँ।।

रचना-
पूनम गुप्ता "कलिका" (स०अ०)
प्रा०वि० धनीपुर, धनीपुर
अलीगढ़

2 शाम

सूरज डूबा, शाम है आई,
धूप में नरमी सी है छाई।
पंछी घर को वापिस आते,
बच्चे खेलने बाहर है जाते।।

ठण्डी-ठण्डी हवा है चलती,
चाय की सोंधी खुशबू आती।
चुन्नू, मुन्नू, दादा और दादी,
हँसी-ठहाकों की आवाजें आतीं।।

रचना-
डॉ० नीतू शुक्ला (प्र०अ०)
मॉ० प्रा० स्कूल बेथर 1
सिकंदरपुर कर्ण, उन्नाव

3 रात

काली-काली रात लगती,
चाँद तारों से ये सजती।
थक जाते जब करके काम,
रात आती तो करते आराम।।

आसमान हमारा नीला-नीला,
रात में दिखता चमकीला।
आसमान में तारे टिमटिमाते,
चन्दा मामा भी मुस्कुराते।।

रचना-
अनुप्रिया यादव (स०अ०)
क० वि० काजीखेड़ा
खजुहा, फतेहपुर

4 सुबह

सुबह हो गई देखो प्यारी,
चिड़ियाँ चहक रही हैं सारी।
सूरज की भी छाई लाली,
हवा चल रही है मतवाली।।

पिंकी, गोलू अब मत सो,
आलस त्यागो और मुँह धो।
घड़ी में बज गए देखो छः,
उठो जागो और स्कूल चलो।।

रचना-
मृदुला वर्मा (स0अ0)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

मिशन शिक्षण संवाद
• आओ हाथ से हाथ मिलाएँ • • बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएँ •
21.08.2021 शनिवार

बाल साहित्य सृजन

1

बृहस्पति

हीलियम, हाइड्रोजन, मीथेन,
अमोनिया, जल और एथेन।
जिससे मिलकर बना है यह ग्रह,
सौरमण्डल का बड़ा बृहस्पति ग्रह।।

सूर्य से पाँचवा गैस पिण्ड यह,
उनहत्तर चन्द्रमा से है सुशोभित।
शक्तिशाली चुम्बकीय क्षेत्र है इसका,
गैलीलियो,गैनीमिड चन्द्रमा से विभूषित।।

रचना-
सुषमा त्रिपाठी (स०अ०)
उ० प्रा० वि० खजनी
खजनी, गोरखपुर

2

शनि

छठवाँ ग्रह है शनि, सूर्य के बाद,
सौरमण्डल में बड़ा बृहस्पति के बाद।
पृथ्वी से नौ गुना बड़ा व्यास में,
औसत घनत्व आठवाँ है पृथ्वी से।।

सैटर्न कहते हैं इसको अंग्रेजी में,
दिखता है हल्के पीले रंग में।
लोहा और निकिल से निर्मित
तरल हाइड्रोजन और हीलियम से।।

रचना-
प्रतिमा उमराव (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० अमौली (1-8)
अमौली, फतेहपुर

3

अरुण

सौरमण्डल के आठ ग्रहों में,
अरुण ग्रह का है सातवाँ स्थान।
गैस अधिक है इस ग्रह में,
गैस दानव है इसका नाम।।

13 मार्च सन 1781 में,
विलियम हर्षल ने खोज निकाला।
-224℃ तापमान है इसमें,
यह सबसे ठण्डा ग्रह कहलाया।।

रचना-
रूपी त्रिपाठी (स०अ०)
उ० प्रा० वि० लोहारी
सरवनखेड़ा, कानपुर देहात

4

वरुण

सूर्य से सबसे दूर वरुण ग्रह,
अत्यन्त ठण्डा है यह ग्रह।
सूर्य से 4.4 अरब किमी० पर होता,
गैस दानव कहलाता ग्रह।।

चौथा सबसे बड़ा है ग्रह,
नेपच्यून कहलाता है वरुण ग्रह।
अमोनिया, मीथेन गैस की बर्फ होती,
14 उपग्रह वाला वरुण ग्रह।।

रचना-
सुमन पाण्डेय (प्र०अ०)
प्रा० वि० टिकरी-मनौटी
खजुहा, फतेहपुर

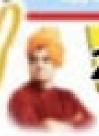

24-08-2021

बाल साहित्य सृजन

मंगलवार

1 दिन

दिन हर चौबीस घण्टे में बदलता,
एक के बाद दूसरा क्रम से चलता।
आज सोमवार तो कल मंगलवार है,
बुध के बाद आ जाता गुरुवार है।।

दिन को हम 'दिवस' भी कहते,
जो दिन महत्वपूर्ण उसे याद रखते।
दिन सात का एक सप्ताह बन जाता,
आठवें दिन वही दिन फिर आता।।

रचना-
नैमिष शर्मा (स०अ०)
उच्च प्रा० विद्यालय (1-8)- तेहरा
विकास खण्ड व जनपद- मथुरा

2 सप्ताह

सप्ताह में होते दिन सात,
सोमवार से होती शुरुआत।
मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्रवार,
करते हैं सब काम लगातार।।

कहीं-कहीं होती छुट्टी शनिवार,
बन्द रहते कुछ ऑफिस, बाजार।
उसके बाद है आता रविवार,
छुट्टी मनाते हैं सब सपरिवार।।

रचना-
जितेन्द्र कुमार (स०अ०)
प्रा० वि० धनौरा सिल्वर नगर-1
बागपत, बागपत

3 माह

जानो बारह महीनों की यह लड़ी,
गणतन्त्र, जनवरी, बसन्त, फरवरी।
मार्च-अप्रैल में होली, परीक्षा,
मई-जून में चले 'लू' अनिच्छा।।

जुलाई, अगस्त, सितम्बर, बरसात,
राखी, स्वतन्त्रता-दिवस भी आयें।
अक्टूबर-नवम्बर दिवाली-दशहरा,
दिसम्बर में क्रिसमस-डे मनायें।।

रचना-
ज्योति विश्वकर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि०- जारी (भाग- 1)
बड़ोखर खुर्द, बाँदा

4 वर्ष

बारह माह जब पूरे हो जाएँ,
वो मिलकर साल कहलाएँ।
365 दिन में पूरा होता साल,
हर साल करता बड़े कमाल।।

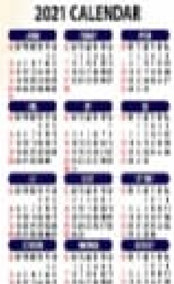

साल में जन्मदिवस मनाते,
हर त्यौहार हर साल में आते।
साल में ही मौसम है आते,
गर्मी की छुट्टी साल में पाते।।

रचना-
शहनाज़ बानो (स०अ०)
उ० प्रा० वि० भौंरी,
मानिकपुर, चित्रकूट

· आओ हाथ से हाथ मिलाएँ ·
मिशन शिक्षण संवाद
· बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएँ ·
25 अगस्त 2021
बुधवार

बाल साहित्य सृजन

1

छुपन-छुपाई

बचपन में जब सभी साथी,
एक साथ मिला करते थे।
छुपन-छुपाई खेल को,
खूब मजे से खेला करते थे।।

सभी साथियों को इधर-उधर,
जाकर छुपना होता था।
केवल एक साथी को ही,
सभी को ढूँढना होता था।।

रचना-
माला सिंह (स०अ०)
क० वि० भरौटा
सरधना, मेरठ

2

गुड़िया का ब्याह

मेरी सुन्दर सी गुड़िया रानी,
आज बनी दुल्हनियाँ प्यारी।
अच्छे अच्छे पकवान बनाऊँ,
उसको सुन्दर सा आज सजाऊँ।।

दूल्हा बनकर आये गुड्डे राजा,
शादी में खूब बज रहा है बाजा।
सखियों संग मंगलगीत मैं गाऊँ,
अपनी गुड़िया का ब्याह रचाऊँ।।

रचना-
इला सिंह (स०अ०)
उ० प्रा० वि० पनेरूवा
अमौली, फतेहपुर

3

मिट्टी का घर

रिया-प्रिया चलो मिट्टी लाये,
उससे सुन्दर प्यारा घर बनायें।
गुड्डा-गुड़ियाँ इसमें बिठाकर,
खिलौनों से इसे खूब सजाएँ।।

हमारा है यह घर बड़ा अनोखा,
इसमें ना कोई बल्ब ना पंखा।
मम्मी-पापा को अपना घर दिखाया,
स्नेह और दुलार उनसे खूब है पाया।।

रचना-
नीलम भास्कर (स०अ०)
उ० प्रा० वि० सिसाना,
बागपत

4

पतंग उड़ाना

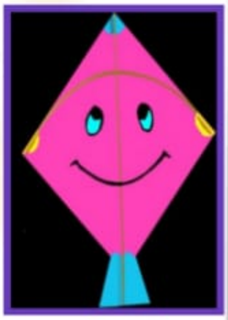

रंग- बिरंगी पतंग,
उड़ जाती डोर संग।
हवा के साथ ऊपर जाती,
आसमान से बातें करती।।

एक जगह यह न रुकती,
सारे आसमान की सैर करती।
सबके मन को प्यारी लगती,
हवा में जब पतंग घूमती।।

रचना-
आरती यादव (स०अ०)
प्रा० वि० रनियां प्रथम
सरवनखेड़ा, कानपुर देहात

26/08/2021

गुरूवार

बाल साहित्य सृजन

1

बाजरे से बनी हुई,
रोटी, खिचड़ी, चूरमा।
सर्दी में शौक से खाते,
बड़े बड़े सब सूरमा।।

न सिर्फ खाने में आता,
है यह अद्भुत औषधि।
खाने की इच्छा है बढ़ाता,
दर्दनिवारक औषधि।।

रचना-
हेमलता गुप्ता (स०अ०)
प्रा०वि० मुकन्दपुर
लोधा, अलीगढ

2

मक्का

मक्के के दाने पीले-पीले,
देखने में लगते बड़े रसीले।
आग पर सिंकते नरम भुट्टे,
नींबू नमक लगाकर चखते।।

बारिश में भुट्टे प्यारे लगते,
मोती सा दाने इनके सारे लगते।
हरी बाँली से ढके खुदको,
पाँप-काँन भी कहते हैं इनको।।

रचना-
वन्दना यादव 'ग़ज़ल'
अभि० प्रा० वि० चन्दवक,
डोभी, जौनपुर

3

गेहूं

भारत की प्रमुख फसल,
मानी जाती है गेहूं को।
समशीतोष्ण जलवायु में ही,
बोया जाता है गेहूं को।।

रबी की फसल के नाम से,
जाना जाता है गेहूं को।
भारत के साथ अन्य देशों में,
खाया जाता है गेहूं को।।

रचना-
शिप्रा सिंह (स०अ०)
उ० प्रा० वि० रूसिया
अमौली, फतेहपुर

4

चना

हरा-हरा चना खेतों में लहराता,
डाली - डाली पर शान दिखाता।
चने से पीला बेसन बनता है,
रोटी, झिलर , साग भी बनता है।।

आयरन, कार्बोहाइड्रेट भी होता,
भोजन से शरीर स्वस्थ होता।
बेसन का मीठा हलुवा बनता,
बेसन का कोफ्ता भी बनता।।

रचना-
ऊषा रानी (स०अ०)
उ०प्रा०वि० खाता
मवाना , मेरठ

27/08/21

बाल साहित्य सृजन

शुक्रवार

1 नींबू पानी

जब करती गर्मी मनमानी,
अच्छा लगता नींबू पानी।
नींबू से हम इसे बनाते,
बर्फ और चीनी मिलाते।।

खट्टा-मीठा हमें सुहाता,
इसका स्वाद सभी को भाता।
जब किसी का जी मिचलाता,
नींबू पानी याद है आता।।

रचना-
पूनम गुप्ता "कलिका" (स०अ०)
प्रा०वि० धनीपुर, धनीपुर
अलीगढ़

2 आइसक्रीम

ठण्डी-ठण्डी मीठी आइसक्रीम,
बच्चों को भाती है आइसक्रीम।
गर्मी में ठण्डक मिल जाती,
जब खाते है हम आइसक्रीम।।

चॉकलेट, वनीला या टूटी फ्रूटी,
तरह-तरह की होती आइसक्रीम।
बच्चे खाकर झूमे गाएँ,
उनकी फेवरेट होती आइसक्रीम।।

रचना-
डॉ० नीतू शुक्ला (प्र०अ०)
मॉ० प्रा० स्कूल बेथर 1
सिकंदरपुर कर्ण, उन्नाव

3 शरबत

चुभती गर्मी का मौसम आया,
सबको शरबत याद आया।
तेज धूप ने जब परेशान किया,
तब ठण्डा-ठण्डा शरबत भाया।।

बर्फ मिला कर ठण्डा बनाते ,
चीनी स्वाद को मीठा करती।
मीठा-मीठा शरबत पीकर,
शरीर को ठण्डक पहुँचती।।

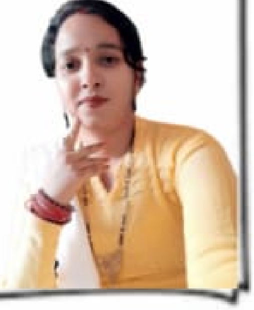

रचना-
अनुप्रिया यादव (स०अ०)
क० वि० काजीखेड़ा
खजुहा, फतेहपुर

4 छाछ

छाछ है शीतल पेय पदार्थ,
जो हमें गर्मी से बचाता।
दही को देर तक मथने से
स्वादिष्ट छाछ बन जाता।।

छाछ में है गुणों का खजाना,
आयुर्वेद ने इसे उपयोगी माना।
जो दिनचर्या में इसे अपनाता,
बीमारियों को दूर भगाता।।

रचना-
मृदुला वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
अमरौधा, कानपुर देहात

28.08.2021

बाल साहित्य सृजन

शनिवार

1 केवट

लहर-लहर नदिया लहराए,
देख के मन हिचकोले खाये।
उस ओर किनारे तक पहुँचाए,
केवट नैया पार लगाए।।

श्री राम जब वन को धाए,
संग में सीता, लक्ष्मण आये।
सरयू नदी के दूसरे तट तक,
केवट ही उनको पहुँचाए।।

रचना-
रूपी त्रिपाठी (स०अ०)
उ० प्रा० वि० लोहारी
सरवनखेड़ा, कानपुर देहात

2 नाव

नाव हूँ मैं नाव हूँ,
पतवार से चलती नाव हूँ।
इंजन भी मुझमें लगता है,
मैं हवा से चलती नाव हूँ।

माँझी को पार लगाती हूँ,
नदियों में आती-जाती हूँ।
मुझसे इन्सान, सामान किनारे लगता,
मैं सबका दिल हर्षाती हूँ।।

रचना-
सुषमा त्रिपाठी (स०अ०)
उ० प्रा० वि० खजनी
खजनी, गोरखपुर

3 नदी

सतत भरी रहती हूँ जल से,
साफ-स्वच्छ जल रहता है मेरा।
सबकी प्यास बुझाती हूँ मैं,
सब जीवों से नाता है मेरा।।

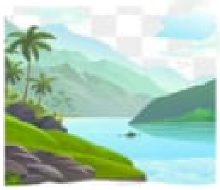

हरा-भरा करतीं हूँ धरा को,
फसल सींचती हूँ अपने जल से।
गंगा, यमुना, सरयू के नीर को,
पूजते मानव अपने मन से।।

रचना-
प्रतिमा उमराव (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० अमौली (1-8)
अमौली, फतेहपुर

4 पुल

नदी पार करना हो या नाले,
पुल बनाकर पार लगा ले।
गहरी हो यदि खाई कोई,
पुल पर चढ़कर पहुँच बना ले।।

लकड़ी, कंक्रीट से बनता पुल,
बहुत काम का होता पुल।
जहाँ पहुँच ना बने किसी की,
सब जगह पहुँच बनाता पुल।।

रचना-
सुमन पाण्डेय (प्र०अ०)
प्रा० वि० टिकरी-मनौटी
खजुहा, फतेहपुर

बाल साहित्य सृजन

1

गिलोय

गिलोय गुणकारी होती है,
बहुवर्षीय लता होती है।
अमृता भी इसको हैं कहते,
पान के जैसे इसके पत्ते होते।।

बुखार की महान दवाई होती,
प्लेटलेट्स को भी यह बढ़ाती।
गुडुच्ची, छिन्नरुहा, चक्रांगी,
जीवन्तिका भी यही कहलाती।।

रचना-
रीना काकरान (स०अ०)
प्रा० वि० सालेहनगर,
जानी, मेरठ

2

नीम

पर्णपाती, औषधीय वृक्ष है,
नीम बड़ा होता उपयोगी।
स्वाद में कड़वे इसके अवयव,
सदा बनाते तन को निरोगी।।

छाल, पत्तियाँ, फूल, निबौली,
सभी काम में आते हैं।
पेट, त्वचा, दाँतों के रोगी,
नीम से राहत पाते हैं।।

रचना-
शिखा वर्मा (इं०प्र०अ०)
उ० प्रा० वि० स्योढ़ा
बिसवाँ, सीतापुर

3

एलोवेरा

औषधीय पौधा है अद्भुत,
एलोवेरा जिसका नाम।
गूदेदार नुकीली पत्ती,
हरे रंग की दिखे तमाम।।

त्वचा बनाए सौम्य, मुलायम,
बालों को रौनक दे जाए।
विटामिन 'ए' और 'सी' से भरपूर,
गमले में सुन्दर अति भाए।।

रचना-
अरविन्द कुमार सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० धवकलगंज,
बड़ागाँव, वाराणसी

4

तुलसी

औषधीय गुण मुझमें भरपूर,
रोगों से सबको रखती दूर।
पायी जाती घर के आगन में,
लोग आस्था रखते हैं मन में।।

हिन्दू पवित्र, पूजनीय कहते,
तुलसी नाम से मुझे जानते।
रखूँ सुरक्षित वातावरण को,
प्रयोग में लेना मेरे गुणों को।।

रचना-
मन्जू शर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० नगला जगराम,
सादाबाद, हाथरस

मिशन शिक्षण संवाद

• आओ हाथ से हाथ मिलाएँ • मिशन शिक्षण संवाद • बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएँ •

31-08-2021

बाल साहित्य सृजन

मंगलवार

1 देवकी

कंस ने अपनी प्रिय बहन,
देवकी का विवाह वसुदेव से रचाया।
देवकी का आठवाँ पुत्र उसका,
काल है आकाशवाणी ने बताया।।

कंस ने अपनी मृत्यु के डर से,
वसुदेव-देवकी को बन्दी बनाया।
कारागार में ही देवकी के गर्भ से,
श्री कृष्ण भगवान ने जन्म पाया।।

रचना-
जितेन्द्र कुमार (स०अ०)
प्रा० वि० धनौरा सिल्वर नगर-1
बागपत, बागपत

2 वासुदेव

वसुदेव, उग्रसेन के मन्त्री,
कुन्ती के भाई, देवकी के पति।
आकाशवाणी सुन डरा कंस,
कारागार में ड़ाला बदली मति।।

पिता कृष्ण के थे वसुदेव,
कंस के थे वो बहनोई।
कृष्ण जन्मे वसुदेव ले गए गोकुल,
सारी मथुरा नगरी थी सोयी।।

रचना-
नैमिष शर्मा (स०अ०)
उच्च प्रा० विद्यालय (1-8)- तेहरा
विकास खण्ड व जनपद- मथुरा

3 यशोदा

मैया देवकी ने जन्मा था,
मैया यशोदा ने पाला।
मैया यशोदा के प्यारे थे,
ब्रज के प्यारे नन्दलाला।।

संस्कार सारे कृष्णा ने,
मैया यशोदा से पाये।
छवि प्यारी-प्यारी कृष्ण की,
यशोदा के मन को लुभाये।।

रचना-
शहनाज़ बानो (स०अ०)
उ० प्रा० वि० भौंरी,
मानिकपुर, चित्रकूट

4 नन्दबाबा

भगवान कृष्ण के पालक पिता,
गोकुल के मुखिया कहलाये।
परजन्या महाराज के पुत्र,
नन्द बाबा नाम सबको भाये।।

वात्सल्य रस के अधिदेवता,
श्याम में प्राण थे बसते।
प्रजा पालक, नन्द बाबा ब्रज संग,
नित्य लोक से थे प्रकटे।।

रचना-
ज्योति विश्वकर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि०- जारी (भाग- 1)
बड़ोखर खुर्द, बाँदा

आपका दिन शुभ हो..

शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण.

शिकायत या सुझाव के लिए व्हाट्सएप करें. 94582 78429

संकलन
काव्यांजलि टीम
मिशन शिक्षण संवाद

मिशन शिक्षण संवाद

बाल साहित्य सृजन

रचनाकारों की सूची

01- शिखा वर्मा, सीतापुर
02- रीना काकरान, मेरठ
03- मन्जू शर्मा, हाथरस
04- अरविन्द कुमार सिंह, वाराणसी
05- सतीश चन्द्र, सीतापुर
06- नैमिष शर्मा, मथुरा
07- जितेन्द्र कुमार, बागपत
08- शहनाज़ बानो, चित्रकूट
09- ज्योति विश्वकर्मा, बाँदा
10- आरती यादव, कानपुर देहात
11- नीलम भास्कर, बागपत
12- इला सिंह, फतेहपुर
13- माला सिंह, मेरठ
14- वन्दना यादव 'ग़ज़ल'- जौनपुर
15- शिप्रा सिंह - फतेहपुर
16- ऊषा रानी- मेरठ
17- ज्योति सागर - बागपत
18- हेमलता गुप्ता, अलीगढ़
19- डॉ० नीतू शुक्ला
20- पूनम गुप्ता "कलिका"
21- अनुप्रिया यादव
22- मृदुला वर्मा
23- सुमन पाण्डेय, फतेहपुर
24- प्रतिमा उमराव, फतेहपुर
25- सुषमा त्रिपाठी,गोरखपुर
26- रूपी त्रिपाठी, कानपुर देहात

तकनीकी सहयोग

1- नैमिष शर्मा, मथुरा
2- जितेन्द्र कुमार, बागपत

मार्गदर्शन- राजकुमार शर्मा, चित्रकूट

संकलन- काव्यांजलि दैनिक सृजन टीम